17 सूरए बनी इसराईल

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1

आयत का अनुवाद:

"ह ख़ुदा (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है जिसने अपने बन्दों को रातों रात मस्जिदुल हराम (ख़ान ऐ काबा) से मस्जिदुल अक़्सा (आसमानी मस्जिद) तक की सैर कराई जिसके चैगिर्द हमने हर किस्म की बरकत मुहय्या कर रखी हैं ताकि हम उसको (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखाए इसमें शक नहीं कि (वह सब कुछ) सुनता (और) देखता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा ने अपने बन्दों को एक रात में मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अक़्सा की यात्रा कराई।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में ईश्वर की अद्भुत कुदरत का हवाला दिया गया है, जिसमें रातों-रात यात्रा करवाई गई। हालांकि, यह दावा ऐतिहासिक और अनुभवजन्य साक्ष्यों से प्रमाणित नहीं किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): इस तरह की घटनाएं प्राचीन मिथकों में दिखाई देती हैं, लेकिन आधुनिक विज्ञान और प्रमाणिक दृष्टिकोण से इसे भौतिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (प्रत्यक्षा) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसके पास कोई ठोस ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 2

आयत का अनुवाद:

"और हमने मूसा को किताब (तौरैत) अता की और उस को बनी इसराईल की रहनुमा क़रार दिया (और हुक्म दे दिया) कि ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हम ने नूह के साथ कश्ती में सवार किया था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने मूसा को किताब दी और उसे बनी इसराईल का रहनुमा बनाया।**
- **हेतु (Reason): इस आयत का तर्क यह है कि मूसा को एक विशेष किताब दी गई और उसे ईश्वर द्वारा एक नेतृत्वकर्ता के रूप में नियुक्त किया गया। हालांकि, यह दावा उस समय के सामाजिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों से पूरी तरह मेल नहीं खाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय साहित्य में भी कर्मकांड और निर्देशों के लिए वेदों और उपनिषदों का उल्लेख मिलता है, लेकिन यहाँ मूसा के संदर्भ में विशेष प्रमाण और अन्य सभ्यताओं के समानान्तर कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

आयत 3
आयत का अनुवाद:
"मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना बेशक नूह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर के अलावा किसी और को अपना कारसाज़ न बनाना।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की एकमात्र सत्ता को प्रमाणित करने का प्रयास करती है, लेकिन इसका कोई व्यावहारिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। अन्य धर्मों में भी ईश्वर के स्थान पर विभिन्न मार्गदर्शक और शिक्षक माने गए हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय संस्कृति में गुरु और शिक्षक की महिमा है। विशेषकर वेदांत और अन्य दर्शन में गुरु को ईश्वर के रूप में माना जाता है, जो व्यक्तित्व विकास के लिए अहम होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल विश्वास और श्रद्धा पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल खाता हो।**

आयत 4

आयत का अनुवाद:

"और हमने बनी इसराईल से इसी किताब (तौरैत) में साफ साफ बयान कर दिया था कि तुम लोग रुए ज़मीन पर दो मरतबा ज़रुर फसाद फैलाओगे और बड़ी सरकशी करोगे।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): बनी इसराईल के लोग भूमि पर दो बार फसाद फैलाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह दावा भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह निष्कर्ष केवल अनुमानों और अनुमानित घटनाओं पर आधारित है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): किसी भी समाज में भविष्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अनुमान सामान्य रूप से पूरी तरह से सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि घटनाएँ अनिश्चित होती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी प्रमाण या तर्क का उपयोग नहीं किया गया है।**

आयत 5

आयत का अनुवाद:

"फिर जब उन दो फसादों में पहले का वक़्त आ पहुँचा तो हमने तुम पर कुछ अपने बन्दों (नजतुलनस्र) और उसकी फौज को मुसल्लत {ग़ालिब} कर दिया जो बड़े सख़्त लड़ने वाले थे तो वह लोग तुम्हारे घरों के अन्दर घुसे (और खूब क़त्ल व ग़ारत किया) और ख़ुदा के अज़ाब का वायदा जो पूरा होकर रहा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने अपने बन्दों को उन पर जीत दिलाई और अज़ाब का वायदा पूरा किया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर के फैसले और कर्मों के प्रभाव को संदर्भित करती है, लेकिन यह घटनाएँ ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं की जा सकतीं। कोई भौतिक या ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है जो इस घटना को सही साबित कर सके।**
- **उदाहरण (Example): विभिन्न युद्धों और संघर्षों के परिणामों को हम केवल सामान्य दृष्टिकोण से देख सकते हैं, लेकिन इन्हें ईश्वर के सीधे हस्तक्षेप के रूप में साबित करना कठिन है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि इसके पास कोई ठोस ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
1	**प्रमाण**	**रातों-रात यात्रा का दावा ऐतिहासिक और वैज्ञानिक साक्ष्य से सिद्ध नहीं है।**
2	**प्रमेय**	**मूसा की भूमिका और किताब का दावा ऐतिहासिक संदर्भ से मेल नहीं खाता।**
3	**प्रमाण**	**ईश्वर के अलावा अन्य स्रोतों की अस्वीकृति केवल विश्वास पर आधारित है।**
4	**व्याप्ति**	**भविष्यवाणी का दावा बिना किसी प्रमाण के किया गया है।**
5	**प्रमाण**	**ईश्वर के हस्तक्षेप के दावे का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में ईश्वर के द्वारा किए गए अद्भुत कार्यों और घटनाओं का वर्णन किया गया है, लेकिन इनमें से अधिकांश दावे ऐतिहासिक और वैज्ञानिक प्रमाण से समर्थित नहीं हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांत, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क, का पालन इन आयतों में नहीं किया गया है। इन विचारों में तात्त्विक दृष्टि से कमजोरी और अप्रमाणिकता प्रतीत होती है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6
आयत का अनुवाद:

"फिर हमने तुमको दोबारा उन पर ग़लबा देकर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने बनी इसराईल को दोबारा विजय दिलाई और उन्हें संसाधनों और बल से सहायता दी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की मदद और विजय का दावा करती है, लेकिन यह घटना ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं की जा सकती। इस तरह के दावे का कोई ठोस भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): इतिहास में कई युद्ध और संघर्ष हुए, लेकिन ईश्वर की सीधे मदद से जुड़ी कोई सिद्ध घटना नहीं मिलती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसके पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है, जो इस दावे को सिद्ध कर सके।**

आयत 7

आयत का अनुवाद:

"अगर तुम अच्छे काम करोगे तो अपने फायदे के लिए अच्छे काम करोगे और अगर तुम बुरे काम करोगे तो (भी) अपने ही लिए फिर जब दूसरे वक़्त का वायदा आ पहुँचा तो (हमने तैतूस रोगी को तुम पर मुसल्लत किया) ताकि वह लोग (मारते मारते) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें (कि पहचाने न जाओ) और जिस तरह पहली दफा मस्जिद बैतुल मुक़द्दस में घुस गये थे उसी तरह फिर घुस पड़ें और जिस चीज़ पर क़ाबू पाए खूब अच्छी तरह बरबाद कर दी।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: **अच्छे और बुरे कर्मों का परिणाम व्यक्ति पर पड़ता है और यदि वे बुरे कर्म करते हैं, तो उन्हें ईश्वर के दंड का सामना करना पड़ेगा।**
- **हेतु (Reason)**: **यह आयत इस तथ्य पर बल देती है कि बुरे कर्मों का परिणाम अत्यधिक दंड के रूप में होगा, लेकिन इसे बिना तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।**

- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत स्पष्ट है, लेकिन यह सिद्धांत तर्क और प्रमाण के आधार पर होता है, न कि बिना किसी तर्क के व्यक्तियों को दंडित करने के आधार पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें बुरे कर्मों के परिणाम को बिना तर्क या प्रमाण के प्रमाणित किया गया है।

आयत 8

आयत का अनुवाद:

"(अब भी अगर तुम चैन से रहो तो) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर तरस खाए और अगर (कहीं) वही शरारत करोगे तो हम भी फिर पकड़ेंगे और हमने तो काफिरों के लिए जहन्नुम को क़ैद खाना बना ही रखा है।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** अगर लोग शरारत करेंगे, तो उन्हें ईश्वर दंड देगा और काफिरों के लिए जहन्नुम है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत कर्म और उसके फल का दावा करती है, लेकिन बिना किसी विशिष्ट उदाहरण या प्रमाण के, यह केवल विश्वास पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत भले ही सत्य हो, लेकिन इसका प्रमाणित तर्क दिया जाता है, न कि केवल अनुमान पर आधारित सजा दी जाती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अनुमान (Anumana) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है जो इसके दावे को प्रमाणित कर सके।

आयत 9

आयत का अनुवाद:

"इसमें शक नहीं कि ये कुरान उस राह की हिदायत करता है जो सबसे ज़्यादा सीधी है और जो इमानदार अच्छे अच्छे काम करते हैं उनको ये खुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा अज्र और सवाब (मौजूद) है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** कुरान लोगों को सीधी राह दिखाता है और अच्छे काम करने वालों को बड़ा पुरस्कार देता है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत कुरान के सत्य होने और उसके माध्यम से मार्गदर्शन देने का दावा करती है, लेकिन इस दावे को भी केवल विश्वास और श्रद्धा पर आधारित किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी वेद और उपनिषद लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन इसके लिए भी तर्क और प्रमाण की आवश्यकता होती है, न कि केवल विश्वास से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि कुरान को सत्य साबित करने के लिए कोई प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है।

आयत 10

आयत का अनुवाद:

"और ये भी कि बेशक जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते हैं उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, उनके लिए एक दंड तैयार किया गया है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत विश्वास और विश्वास न करने वालों के लिए दंड का दावा करती है, लेकिन यह केवल विश्वास और धार्मिक धारणा पर आधारित है, इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी कर्म और फल का सिद्धांत है, लेकिन इस सिद्धांत को तर्क और प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी ठोस प्रमाण या तर्क के बिना दंड का दावा किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

6	**प्रमाण**	**ईश्वर द्वारा दी गई मदद का दावा ऐतिहासिक और प्रमाणिक नहीं है।**
7	**व्याप्ति**	**बुरे कर्मों के परिणाम का दावा बिना तर्क के किया गया है।**
8	**अनुमान**	**कर्मफल के दावे का कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।**
9	**प्रमेय**	**कुरान को मार्गदर्शक सिद्ध करने का कोई प्रमाण नहीं है।**
10	**प्रमाण**	**दंड का दावा बिना किसी प्रमाण या तर्क के किया गया है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कर्म और उसके परिणाम, ईश्वर का मार्गदर्शन, और दंड के सिद्धांत का उल्लेख किया गया है, लेकिन इनमें से अधिकांश दावे बिना प्रमाण और तर्क के किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन विचारों में तात्त्विक कमजोरी और प्रमाण की कमी है। इन आयतों में जो दावा किया गया है, वह केवल विश्वास पर आधारित है और तर्क के आधार पर इसे सिद्ध करना कठिन है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11
आयत का अनुवाद:
"और आदमी कभी (आजिज़ होकर अपने हक़ में) बुराई (अज़ाब वग़ैरह की दुआ) इस तरह माँगता है जिस तरह अपने लिए भलाई की दुआ करता है और आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आदमी अपने लिए बुराई की दुआ करता है जैसे वह भलाई की दुआ करता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत मनुष्य की प्रकृति पर टिप्पणी करती है, लेकिन इसे बिना किसी ठोस प्रमाण या वैज्ञानिक आधार के प्रस्तुत किया गया है। हर व्यक्ति का व्यवहार अलग होता है, और यह कहना कि "आदमी जल्दबाज़ है" एक सामान्यीकृत निष्कर्ष है।**

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ और निर्णय उसके मनोविज्ञान और परिस्थिति पर निर्भर करते हैं, न कि एक समान धारणा पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है जो प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति को एक समान रूप में प्रस्तुत करता हो।

आयत 12

आयत का अनुवाद:

"और हमने रात और दिन को (अपनी कुदरत की) दो निशानियाँ क़रार दिया फिर हमने रात की निशानी (चाँद) को धुँधला बनाया और दिन की निशानी (सूरज) को रौशन बनाया (कि सब चीज़े दिखाई दें) ताकि तुम लोग अपने परवरदिगार का फज़्ल ढूँढते फिरों और ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब को जानो (बूझों) और हमने हर चीज़ को खूब अच्छी तरह तफसील से बयान कर दिया है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ईश्वर ने रात और दिन को अपनी निशानियाँ बनाया और चाँद और सूरज को विशेष रूप से आकार दिया।
- **हेतु (Reason):** यह आयत प्राकृतिक घटनाओं के लिए ईश्वर की कुदरत को श्रेय देती है, लेकिन यह बिना किसी वैज्ञानिक आधार या प्रमाण के प्राकृतिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करती है।
- **उदाहरण (Example):** सूर्य और चाँद के अस्तित्व और उनके कार्यों का वैज्ञानिक आधार स्पष्ट रूप से स्थापित है, जिसे प्राकृतिक और खगोलशास्त्र के सिद्धांतों द्वारा समझाया जा सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें प्राकृतिक घटनाओं को बिना ठोस वैज्ञानिक प्रमाण के ईश्वर की कुदरत का प्रतिफल माना गया है।

आयत 13

आयत का अनुवाद:

"और हमने हर आदमी के नामए अमल को उसके गले का हार बना दिया है (कि उसकी किस्मत उसके साथ रहे) और क़यामत के दिन हम उसे उसके सामने निकल के रख देगें कि वह उसको एक खुली हुयी किताब अपने रुबरु पाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): हर आदमी का कर्म उसके गले में एक हार की तरह है और क़यामत के दिन उसे अपने कर्मों की खुली किताब दिखाई जाएगी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत कर्मफल और क़यामत के दिन के दावे को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई ठोस वैज्ञानिक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में कर्म का सिद्धांत है, लेकिन इसके आधार पर तर्क, प्रमाण, और अनुभव की आवश्यकता होती है, न कि केवल अनुमान और विश्वास के आधार पर परिणामों का निर्धारण।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अनुमान** (Anumana) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कर्मफल और क़यामत के दिन के बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**

आयत 14

आयत का अनुवाद:

"और हम उससे कहेंगें कि अपना नामए अमल पढ़ले और आज अपने हिसाब के लिए तू आप ही काफी हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब अपनी किताब में देखना होगा और उसे अपने कर्मों का निर्णय स्वयं करना होगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत आत्मनिर्भरता और कर्मफल पर बल देती है, लेकिन यह केवल विश्वास के आधार पर यह दावा करती है कि हर व्यक्ति को अपनी कर्मों की समीक्षा करनी होगी।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी कर्मफल का सिद्धांत है, लेकिन इसका आधार तर्क और अनुभवजन्य प्रमाण पर होता है, न कि केवल व्यक्तिगत विश्वास पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें केवल विश्वास के आधार पर कर्मों का निष्कर्ष निकाला गया है।**

आयत 15

आयत का अनुवाद:

"जो शख़्स रुबरु होता है तो बस अपने फायदे के लिए शह पर आता है और जो शख़्स गुमराह होता है तो उसने भटक कर अपना आप बिगाड़ा और कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ अपने सर नहीं लेगा और हम तो जब तक रसूल को भेजकर तमाम हुज्जत न कर लें किसी पर अज़ाब नहीं किया करते।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार है और किसी अन्य के कर्म का बोझ नहीं उठाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्यक्तियों के लिए जिम्मेदारी का सिद्धांत प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे केवल विश्वास के आधार पर कहा गया है, जबकि न्याय दर्शन में यह सिद्धांत तर्क और प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति का आत्मकर्म उसकी जिम्मेदारी है, लेकिन यह निर्णय तर्क और प्रमाण के आधार पर होता है, न कि केवल धार्मिक विश्वास पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें व्यक्तिगत जिम्मेदारी का सिद्धांत केवल विश्वास पर आधारित है और तर्क या प्रमाण के बिना प्रस्तुत किया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
11	**प्रमेय**	**हर व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति को एक समान रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
12	**प्रमाण**	**प्राकृतिक घटनाओं के बारे में दावा बिना वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है।**
13	**अनुमान**	**कर्मफल और क़यामत का दावा केवल अनुमान पर आधारित है।**
14	**प्रमेय**	**कर्मों के हिसाब को केवल विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।**

15	**व्याप्ति**	**व्यक्तिगत जिम्मेदारी का सिद्धांत केवल विश्वास पर आधारित है, बिना तर्क या प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कर्मफल, व्यक्तिगत जिम्मेदारी और क़यामत के दिन के बारे में दावा किया गया है, लेकिन इनमें से अधिकांश दावे केवल विश्वास और धार्मिक धारणा पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन विचारों में तात्त्विक कमजोरी और प्रमाण की कमी है। इन आयतों में जो दावा किया गया है, वह केवल विश्वास पर आधारित है और तर्क के आधार पर इसे सिद्ध करना कठिन है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16

आयत का अनुवाद:

"और हमको जब किसी बस्ती का वीरान करना मंज़ूर होता है तो हम वहाँ के खुशहालों को (इताअत का) हुक्म देते हैं तो वह लोग उसमें नाफरमानियाँ करने लगे तब वह बस्ती अज़ाब की मुस्तहक़ होगी उस वक़्त हमने उसे अच्छी तरह तबाह व बरबाद कर दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यदि लोग नाफरमानी करते हैं, तो ईश्वर उन बस्तियों को तबाह कर देता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत स्पष्ट करती है कि नाफरमानी करने वाले लोगों को सजा दी जाती है, लेकिन यह दावा बिना किसी प्रमाण या ठोस तर्क के प्रस्तुत किया गया है। अगर हम यह कहें कि सजा देना एक क़ानूनी प्रक्रिया है, तो उसे समाज के सामान्य नियमों से प्रमाणित किया जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): जब कोई व्यक्ति कानून का उल्लंघन करता है, तो उसे क़ानूनी दंड मिलता है, लेकिन इस तरह की प्राकृतिक या धार्मिक सजा बिना किसी न्यायिक प्रक्रिया के तार्किक नहीं हो सकती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि इसमें केवल एक सामान्य कारण-परिणाम का संबंध प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसकी तार्किक और न्यायिक प्रक्रिया की कमी है।**

आयत 17

आयत का अनुवादः

"और नूह के बाद से (उस वक़्त तक) हमने कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने के लिए काफी है।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने के लिए पर्याप्त है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की सर्वज्ञता और उसके गुनाहों के बारे में ज्ञान को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, ईश्वर के ज्ञान और सर्वज्ञता के सिद्धांत पर बहुत विचार किया गया है, लेकिन इसका प्रमाण या तर्क आवश्यक होता है, जो केवल विश्वास से अलग हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण (Pramana) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें सर्वज्ञता का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।**

आयत 18

आयत का अनुवादः

"और जो शख़्स दुनिया का ख़्वाहाँ हो तो हम जिसे चाहते और जो चाहते हैं उसी दुनिया में सिरदस्त {फ़ौरन} उसे अता करते हैं (मगर) फिर हमने उसके लिए तो जहन्नुम ठहरा ही रखा है कि वह उसमें बुरी हालत से रौंदा हुआ दाख़िल होगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग दुनिया की चाहत रखते हैं, उन्हें ईश्वर दुनिया में तुरंत देता है, लेकिन उनका अंतिम परिणाम जहन्नुम होता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दुनियावी इच्छाओं और उनके परिणामों के बारे में बयान करती है, लेकिन इसमें कोई तर्कसंगत और न्यायिक परिप्रेक्ष्य नहीं दिया गया है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत है, लेकिन यह केवल आत्मा और उसके कर्मों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है, न कि बाहरी इच्छाओं और परिणामों के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Prameya (Object of Knowledge) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें केवल बाहरी इच्छाओं के बारे में बयान किया गया है, जबकि तात्त्विक और न्यायिक दृष्टिकोण से यह अधूरा है।**

आयत 19
आयत का अनुवाद:
"और जो शख़्स आख़िर का मुतमइनी हो और उसके लिए खूब जैसी चाहिए कोशिश भी की और वह इमानदार भी है तो यही वह लोग हैं जिनकी कोशिश मक़बूल होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग आख़िरत की इच्छा रखते हैं और ईमानदारी से प्रयास करते हैं, उनकी कोशिश सफल होती है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत कर्मों और इच्छाओं के परिणाम को स्पष्ट करती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **उदाहरण (Example): कर्मफल का सिद्धांत भारतीय दर्शन में स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया गया है, लेकिन यह केवल व्यक्तिगत प्रयास और ईमानदारी के आधार पर नहीं है, बल्कि तात्त्विक, न्यायिक और विवेकी आधारों पर है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Vyapti (Invariable Concomitance) **के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि इसमें व्यक्तिगत प्रयास और ईमानदारी के आधार पर केवल सकारात्मक परिणामों की बात की गई है, जबकि इस प्रकार के कारण-परिणाम का सिद्धांत और परिप्रेक्ष्य अधिक जटिल और विविध हो सकता है।**

आयत 20
आयत का अनुवाद:

”(ऐे रसूल) उनको (ग़रज़ सबको) हम ही तुम्हारे परवरदिगार की (अपनी) बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश तो (आम है) किसी पर बन्द नहीं।”

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर अपनी कृपा से सभी को मदद देता है और उसकी कृपा पर कोई बंदिश नहीं है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की अनुकम्पा और कृपा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे बिना किसी प्रमाण या तर्क के घोषित किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कृपा का सिद्धांत व्यक्तिगत प्रयास और कर्मफल पर आधारित होता है, न कि केवल ईश्वर की अनुकम्पा पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें केवल विश्वास के आधार पर कृपा का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
16	Hetu	**नाफरमानी और सजा के बीच कोई स्पष्ट और न्यायिक तर्क नहीं है।**
17	**प्रमाण**	**सर्वज्ञता और कर्मों के ज्ञान का कोई प्रमाण नहीं है।**
18	Prameya	**इच्छाओं और परिणामों के बारे में कोई न्यायिक या तात्त्विक परिप्रेक्ष्य नहीं है।**
19	Vyapti	**व्यक्तिगत प्रयासों और ईमानदारी के आधार पर सफलता का सामान्यकरण तात्त्विक रूप से अधूरा है।**
20	**प्रमाण**	**कृपा का दावा केवल विश्वास पर आधारित है, इसमें कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कर्म, इच्छाओं, कृपा, और सजा के बारे में जो दावे किए गए हैं, वे तात्त्विक और न्यायिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त हैं। अधिकांश दावे केवल विश्वास और धार्मिक विचारधाराओं पर आधारित हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार प्रमाण या तर्क की कमी को दर्शाते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21
आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो कि हमने बाज़ लोगों को बाज़ पर कैसी फज़ीलत दी है और आख़िरत के दर्जे तो यक़ीनन (यहाँ से) कहीं बढ़के है और वहाँ की फज़ीलत भी तो कैसी बढ़ कर है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुछ लोग दूसरों पर फज़ीलत रखते हैं, लेकिन आख़िरत में उनका दर्जा कहीं ज्यादा है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दुनियावी जीवन में विभिन्न लोगों के बीच असमानता को दिखाती है और यह दावा करती है कि आख़िरत में यह असमानता और भी बढ़ जाएगी।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, जीवन की असमानताओं को कर्म और पौराणिक सिद्धांतों के आधार पर माना जाता है, लेकिन यह सिद्धांत सभी व्यक्तियों के प्रयास और निष्ठा पर आधारित होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) के सिद्धांत के तहत संभावित नहीं है, क्योंकि सभी व्यक्तियों के कर्मों और जीवन की विशेषताओं के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं, जो व्यक्ति की विवेचनाओं से भिन्न हो सकते हैं। आयत में केवल असमानता का सामान्य बयान किया गया है, लेकिन इसके पीछे ठोस तर्क की कमी है।**

आयत 22
आयत का अनुवाद:

"और देखो कहीं ख़ुदा के साथ दूसरे को (उसका) शरीक न बनाना वरना तुम बुरे हाल में ज़लील रुसवा बैठे के बैठें रह जाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अगर कोई शख़्स भगवान के साथ किसी को साझी बनाता है तो वह बुरे हाल में पड़ जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक धार्मिक और नैतिक चेतावनी देती है, लेकिन इसमें कोई तर्कसंगत या प्रायोगिक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से न्याय और वेदांत में, किसी एक सर्वश्रेष्ठ अस्तित्व (ईश्वर) की उपासना का सिद्धांत है, लेकिन यह केवल विश्वास और मानसिक दृष्टिकोण पर आधारित है, न कि तात्विक प्रमाणों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है क्योंकि इसमें बिना प्रमाण के किसी शख़्स की स्थिति का सामान्य निष्कर्ष दिया गया है, जो तात्विक रूप से अप्रमाणित है।**

आयत 23
आयत का अनुवाद:
"और तुम्हारे परवरदिगार ने तो हुक्म ही दिया है कि उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न करना और माँ बाप से नेकी करना अगर उनमें से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँचे (और किसी बात पर खफा हों) तो (ख़बरदार उनके जवाब में उफ तक) न कहना और न उनको झिड़कना और जो कुछ कहना सुनना हो तो बहुत अदब से कहा करो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): माता-पिता के प्रति सम्मान और उनके साथ विनम्रता से पेश आना अनिवार्य है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बड़ों का आदर करने की महत्वता को बताती है, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया है कि ऐसा करना क्यों महत्वपूर्ण है, केवल यह बताया गया है कि यह आदेश ईश्वर से है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, माता-पिता के प्रति श्रद्धा और सम्मान को समाज के नैतिक और पारिवारिक सिद्धांतों के रूप में देखा जाता है, न कि केवल धार्मिक आदेश के रूप में।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) के सिद्धांत को पूरी तरह से पालन नहीं करती है, क्योंकि इसमें कोई तात्त्विक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है, सिर्फ धार्मिक आदेश दिया गया है।**

आयत 24
आयत का अनुवाद:
"और उनके सामने नियाज़ {रहमत} से ख़ाकसारी का पहलू झुकाए रखो और उनके हक़ में दुआ करो कि मेरे पालने वाले जिस तरह इन दोनों ने मेरे छोटेपन में मेरी मेरी परवरिश की है।"

चुना गया न्याय तत्व: Upamana (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): माता-पिता की सेवा और सम्मान करते हुए, उनके लिए दुआ करना चाहिए जैसा उन्होंने हमारी परवरिश की।**
- **हेतु (Reason): यह आयत माता-पिता के प्रति कृतज्ञता और सम्मान का आदेश देती है और इसे तुलनात्मक रूप से हमारी परवरिश के साथ जोड़ा जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में, माता-पिता के प्रति आभार और सेवा का विचार बहुत पुराना है, जो नैतिक रूप से सही है, लेकिन तात्त्विक रूप से इसे धार्मिक आदेश से जोड़ना पूरी तरह से सटीक नहीं हो सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Upamana (Comparison) का प्रयोग करती है, लेकिन इसे तात्त्विक और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है, क्योंकि यह धार्मिक दृष्टिकोण से एक सामान्य तुलनात्मक आदेश है।**

आयत 25
आयत का अनुवाद:
"इसी तरह तू भी इन पर रहम फरमा तुम्हारे दिल की बात तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है अगर तुम (वाक़ई) नेक होगे और भूले से उनकी ख़ता की है तो वह तुमको बख़्श देगा क्योंकि वह तो तौबा करने वालों का बड़ा बख़शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अगर कोई व्यक्ति माता-पिता से गलती करता है और ईमानदारी से तौबा करता है, तो भगवान उसे माफ़ कर देता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत तौबा के महत्व को बताती है, लेकिन इसे बिना किसी ठोस प्रमाण या तर्क के प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, तौबा और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को आत्म-निर्णय और आत्म-समझ के साथ जोड़ा जाता है, जो केवल धार्मिक आदेश से नहीं, बल्कि तात्त्विक और नैतिकता के दृष्टिकोण से सही है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Pramana (Valid Knowledge) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें तौबा के सिद्धांत को विश्वास और धार्मिक आदेश पर आधारित बताया गया है, जबकि यह तात्त्विक प्रमाण से कमज़ोर है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	Vyapti	**असमानता का सामान्य बयान, तात्त्विक आधार से असंगत।**
22	Hetu	**बिना प्रमाण के किसी की स्थिति का सामान्य निष्कर्ष।**
23	Hetu	**तर्क का अभाव, केवल धार्मिक आदेश पर आधारित।**
24	Upamana	**तुलनात्मक आदेश पर आधारित, लेकिन तात्त्विक आधार की कमी।**
25	Pramana	**तौबा के सिद्धांत का कोई ठोस प्रमाण नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में अधिकतर विचार विश्वास, धार्मिक आदेश और नैतिकता पर आधारित हैं, लेकिन तात्त्विक या न्यायिक दृष्टिकोण से इनमें प्रमाण या तर्क की कमी पाई जाती है। इन आयतों में निहित विचार व्यक्तिगत आस्थाओं और धार्मिक विश्वासों से अधिक जुड़ी हुई हैं, जो तात्त्विक रूप से सबको स्वीकार्य नहीं हो सकतीं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद:

"और क़राबतदारों और मोहताज और परदेसी को उनका हक़ दे दो और ख़बरदार फुज़ूल ख़र्ची मत किया करो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): गरीबों, क़राबतदारों और परदेसी को उनका हक़ देना और फुज़ूल ख़र्ची से बचना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत सामाजिक जिम्मेदारी और संयम की आवश्यकता को बताती है, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया कि क्यों इन तत्वों को साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी परोपकार और संतुलित खर्च का महत्व है, लेकिन यह तात्त्विक सिद्धांतों से नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी से जुड़ा हुआ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती, क्योंकि यह किसी तात्त्विक या तर्कसंगत आधार पर नहीं बल्कि केवल सामाजिक अनुशासन पर आधारित है।**

आयत 27

आयत का अनुवाद:

"क्योंकि फुज़ूलख़र्ची करने वाले यक़ीनन शैतानों के भाई है और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुक्री करने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फुज़ूल ख़र्ची करना शैतान के साथ समानता रखने जैसा है।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में शैतान की निंदा की गई है और फुज़ूल ख़र्ची को उसकी नकल के रूप में देखा गया है। हालांकि, इस विचार को तात्त्विक या अनुभवजन्य रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि अत्यधिक और अनुचित खर्च का परिणाम मानसिक असंतुलन और सामाजिक असमानता हो सकता है, लेकिन इसे शैतान से जोड़ना बिना तर्क के है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती है क्योंकि फ़ुज़ूल ख़र्ची को केवल एक नैतिक या धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़कर देखा गया है, तात्त्विक दृष्टिकोण से इसका कोई प्रमाण नहीं है।**

आयत 28

आयत का अनुवाद:

"और तुमको अपने परवरदिगार के फ़ज़ल व करम के इन्तज़ार में जिसकी तुम को उम्मीद हो (मजबूरन) उन (ग़रीबों) से मुँह मोड़ना पड़े तो नरमी से उनको समझा दो।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अगर किसी कारणवश ग़रीबों से मुँह मोड़ना पड़े, तो नरमी से समझाया जाए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत जीवन में कठिन परिस्थितियों को समझते हुए एक सद्गुण की ओर इशारा करती है, लेकिन इसमें इस बात का कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है कि नरमी से समझाना हमेशा ही सही तरीका होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, शिक्षा और तात्त्विकता का आधार व्यक्ति के स्वभाव और परिस्थितियों पर निर्भर करता है, और यह जरूरी नहीं कि हर स्थिति में नरमी से ही समझाया जाए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) के सिद्धांत से जुड़ी नहीं है, क्योंकि इसमें किसी विशिष्ट परिस्थितिक तात्त्विक आधार को पेश नहीं किया गया है, केवल एक सामान्य सामाजिक आचरण की बात की गई है।**

आयत 29

आयत का अनुवाद:

"और अपने हाथ को न तो गर्दन से बँधा हुआ (बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल दो कि सब कुछ दे डालो और आख़िर तुम को मलामत ज़दा हसरत से बैठना पड़े।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): खर्च को संयमित और संतुलित रखना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत खर्च की मितव्ययिता को प्रोत्साहित करती है और इसे अत्यधिक या न्यूनतम के बीच संतुलित रखने की आवश्यकता बताती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, संतुलन का सिद्धांत हर पहलु में देखा जाता है - चाहे वह भौतिक संपत्ति हो या मानसिक स्थिति। यह आयत इस सिद्धांत को प्रकट करती है, लेकिन कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं देती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) के सिद्धांत का पालन करती है क्योंकि खर्च की संतुलन को नियमित रूप से सुझाव दिया गया है, लेकिन इसमें ठोस तात्त्विक प्रमाण की कमी है।**

आयत 30

आयत का अनुवाद:

"इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फराख़ {बढ़ा} देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग रखता है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों से बहुत बाख़बर और देखभाल रखने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर अपनी इच्छा से किसी की रोज़ी को बढ़ाता या घटाता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की इच्छा और विवेक पर आधारित रोज़ी का वितरण दिखाती है, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह सिद्धांत देखा जाता है कि भाग्य और कर्मों का प्रभाव किसी के जीवन पर पड़ता है, लेकिन यह सिद्धांत केवल विश्वास पर आधारित है, न कि ठोस तर्क या प्रमाण पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें किसी प्रमाण या ठोस तर्क के बिना ईश्वर के विवेक से रोज़ी के वितरण का दावा किया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	Hetu	तात्त्विक कारण की कमी, केवल सामाजिक अनुशासन पर आधारित।
27	Hetu	शैतान से जोड़ने का बिना तर्क के निष्कर्ष।
28	Pramana	तात्त्विक प्रमाण या परिस्थितिक आधार की कमी।
29	Vyapti	संतुलन को सामान्य रूप से सुझाया गया, तात्त्विक प्रमाण की कमी।
30	Pramana	ईश्वर के विवेक पर आधारित दावा, तात्त्विक प्रमाण की कमी।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में निहित विचार धार्मिक आस्थाओं और नैतिक अनुशासन से संबंधित हैं, लेकिन तात्त्विक रूप से इनकी पुष्टि के लिए ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिए गए हैं। ये विचार व्यक्तिगत विश्वास और आस्थाओं पर आधारित हैं, जो कि सार्वभौमिक रूप से सही या गलत नहीं हो सकते।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31
आयत का अनुवाद:
"और (लोगों) मुफलिसी {ग़रीबी} के ख़ौफ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो (क्योंकि) उनको और तुम को (सबको) तो हम ही रोज़ी देते हैं बेशक औलाद का क़त्ल करना बहुत सख़्त गुनाह है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ग़रीबी के डर से बच्चों को मारना गलत है, क्योंकि रोज़ी देने वाला ईश्वर है।**

- **हेतु (Reason): यह आयत बच्चों के क़त्ल को सख़्त गुनाह मानती है, क्योंकि ईश्वर ही सभी को रोज़ी देता है। हालांकि, यह दलील पूरी तरह से तात्त्विक रूप से मजबूत नहीं है, क्योंकि व्यक्ति की परिपाटी में ग़रीबी और अन्य परिस्थितियाँ असर डाल सकती हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी यह देखा जाता है कि ग़रीबी की हालत में लोग अवैध उपायों से बच्चों को बचाने की कोशिश करते हैं, लेकिन इसमें तात्त्विक आधार से नहीं बल्कि मजबूरी और अभाव से निर्णय लिया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन नहीं करती है, क्योंकि इसमें केवल विश्वास पर आधारित तर्क दिया गया है और कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।**

आयत 32
आयत का अनुवाद:
"और (देखो) ज़िना के पास भी न फटकना क्योंकि बेशक वह बड़ी बेहयाई का काम है और बहुत बुरा चलन है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ज़िना को अपराध माना गया है क्योंकि यह बेहयाई और बुरा चलन है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ज़िना को सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण से गलत बताती है, लेकिन इसके पीछे कोई ठोस तात्त्विक तर्क या प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी विवाह से बाहर संबंधों को नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से गलत माना जाता है, लेकिन यह व्यक्तिगत और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है, तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण पर नहीं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन नहीं करती है क्योंकि इसमें केवल नैतिकता और सामाजिकता की बातें की गई हैं, बिना तात्त्विक प्रमाण के।**

आयत 33
आयत का अनुवाद:
"और जिस जान का मारना ख़ुदा ने हराम कर दिया है उसके क़त्ल न करना मगर जायज़ तौर पर और जो

शख़्स नाहक़ मारा जाए तो हमने उसके वारिस को (क़ातिल पर क़सास का क़ाबू दिया है तो उसे चाहिए कि क़त्ल {ख़ून का बदला लेने} में ज़्यादती न करे बेशक वह मदद दिया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): किसी का क़त्ल करना हराम है, सिवाय उचित कारण के, और यदि किसी का क़त्ल नाहक़ हो, तो वारिस को क़सास का अधिकार है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत क़त्ल के बदले में क़सास का अधिकार देती है और इसके लिए एक नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से कारण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें तात्त्विक आधार नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय क़ानूनी व्यवस्था में भी अपराधों के लिए सजा तय की जाती है, लेकिन यह सजा तात्त्विक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि क़ानूनी और सामाजिक व्यवस्था से जुड़ी होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती है क्योंकि इसमें किसी तात्त्विक तर्क के बिना केवल धार्मिक और नैतिक आधार पर क़सास का आदेश दिया गया है।**

आयत 34

आयत का अनुवाद:

"और यतीम जब तक जवानी को पहुँचे उसके माल के क़रीब भी न पहुँच जाना मगर हाँ इस तरह पर कि (यतीम के हक़ में) बेहतर हो और एहद को पूरा करो क्योंकि (क़यामत में) एहद की ज़रुर पूछ गछ होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यतीम के माल को गलत तरीके से न लेना चाहिए, बल्कि उनके हक़ में बेहतर करना चाहिए, और एहद को पूरा करना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यतीम के अधिकारों की रक्षा करने की सलाह देती है, लेकिन इसमें तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया कि क्यों यतीम के माल को न छेड़ना चाहिए, केवल सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी यतीमों के अधिकारों का सम्मान किया जाता है, लेकिन यह केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से होता है, तात्त्विक दृष्टिकोण से नहीं।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती है क्योंकि इसमें किसी तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार से समर्थन नहीं मिलता है।**

आयत 35

आयत का अनुवाद:

"और जब नाप तौल कर देना हो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और (जब तौल कर देना हो तो) बिल्कुल ठीक तराज़ू से तौला करो (मामले में) यही (तरीक़ा) बेहतर है और अन्जाम (भी उसका) अच्छा है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जब नाप तौल करना हो तो पैमाना और तराज़ू सही और पूरे तरीके से इस्तेमाल करें।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्यापार में ईमानदारी और सही तौल की अहमियत को बताती है, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक आधार नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्यायव्यवस्था में व्यापारिक मामलों में तौल और माप के बारे में कड़े नियम हैं, लेकिन यह केवल सामाजिक और कानूनी दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं, न कि तात्त्विक दृष्टिकोण पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती है, क्योंकि इसमें केवल व्यापारिक नैतिकता और सामाजिक अनुशासन पर ध्यान दिया गया है, बिना तात्त्विक प्रमाण के।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
31	Hetu	**तात्त्विक आधार की कमी, केवल धार्मिक दृष्टिकोण।**
32	Hetu	**तात्त्विक प्रमाण की कमी, केवल सामाजिक अनुशासन।**
33	Hetu	**क़सास का आदेश धार्मिक दृष्टिकोण से है, तात्त्विक प्रमाण की कमी।**

34	Hetu	**यतीम के अधिकारों का सम्मान धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से है, तात्त्विक दृष्टिकोण की कमी।**
35	Hetu	**व्यापारिक नैतिकता पर आधारित, तात्त्विक प्रमाण की कमी।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में व्यक्त विचार धर्म, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता पर आधारित हैं, लेकिन इनमें किसी ठोस तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण का अभाव है। ये विचार सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ में महत्वपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विश्लेषण अनिश्चित रहता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36
आयत का अनुवाद:
"और जिस चीज़ का कि तुम्हें यक़ीन न हो (ख़्वाह मा ख़्वाह) उसके पीछे न पड़ा करो (क्योंकि) कान और आँख और दिल इन सबकी (क़यामत के दिन यक़ीनन बाज़पुर्स होती है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो चीज़ पर यकीन न हो, उसके पीछे नहीं जाना चाहिए, क्योंकि सभी इंद्रियाँ (कान, आँख, दिल) क़यामत के दिन जवाबदेह होंगी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत मानसिक और शारीरिक प्रलोभनों से बचने की बात करती है, लेकिन तात्त्विक रूप से यह साबित नहीं करती कि बिना यकीन के किसी चीज़ के पीछे क्यों न जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में कई लोग अंधविश्वासों के शिकार होते हैं, जो उनके मानसिक भ्रम के परिणामस्वरूप होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसमें कोई ठोस तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं है, यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**

आयत 37

आयत का अनुवाद:

"और (देखो) ज़मीन पर अकड़ कर न चला करो क्योंकि तू (अपने इस धमाके की चाल से) न तो ज़मीन को हरगिज़ फाड़ डालेगा और न (तनकर चलने से) हरगिज़ लम्बाई में पहाड़ों के बराबर पहुँच सकेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अकड़ कर चलना ज़मीन को फाड़ने या पहाड़ों की ऊँचाई को प्राप्त करने जैसा नहीं है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत व्यक्तित्व के अहंकार को आलोचना करती है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार यह है कि कोई व्यक्ति अकड़ कर चलने से भौतिक दुनिया की किसी बड़ी वस्तु को प्रभावित नहीं कर सकता।**
- **उदाहरण (Example): विज्ञान और भौतिकी के दृष्टिकोण से हम जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति पृथ्वी या पहाड़ों को अकड़ कर प्रभावित नहीं कर सकता, यह प्राकृतिक नियमों के खिलाफ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) का पालन करती है, क्योंकि इसमें भौतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह सिद्ध किया जाता है कि अकड़ कर चलने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता।**

आयत 38

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) इन सब बातों में से जो बुरी बात है वह तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक नापसन्द है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): बुरी बातें, जो परवरदिगार के नज़दीक नापसन्द हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बुराई के खिलाफ चेतावनी देती है, लेकिन यह तात्त्विक कारण नहीं बताती कि क्यों बुरी बातें परवरदिगार के नज़दीक नापसन्द हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी बुराई के खिलाफ नैतिक शिक्षा दी जाती है, लेकिन यह धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित होती है, तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं होते।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसमें कोई ठोस तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं है।**

आयत 39

आयत का अनुवाद:

"ये बात तो हिकमत की उन बातों में से जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे पास 'वही' भेजी और ख़ुदा के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाना और न तू मलामत ज़दा राइन्द {धुत्कारा} होकर जहन्नुम में झोंक दिया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): हिकमत की बातों में से एक यह है कि केवल एक ही माबूद को माना जाए और न कोई अन्य देवता।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एकेश्वरवाद की ओर संकेत करती है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है कि क्यों किसी अन्य माबूद को नहीं मानना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी एकेश्वरवाद का सिद्धांत है, लेकिन यह विश्वास तात्त्विक और सांस्कृतिक संदर्भों में मौजूद है, न कि वैज्ञानिक प्रमाण पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन नहीं करती है, क्योंकि इसमें किसी तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार से समर्थन नहीं मिलता है।**

आयत 40

आयत का अनुवाद:

"(ऐ मुशरेकीन मक्का) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें चुन चुन कर बेटे दिए हैं और खुद बेटियाँ ली हैं (यानि) फरिश्ते इसमें शक नहीं कि बड़ी (सख़्त) बात कहते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मुशरेकीन मक्का द्वारा ख़ुदा के साथ अन्य देवताओं की तुलना की जाती है।**

- **हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की विशेषता को स्पष्ट करती है कि वह बेटियाँ नहीं लेता और उसका कोई साझीदार नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय संस्कृति में भी एकेश्वरवाद की अवधारणा है कि परमात्मा का कोई रूप या साझीदार नहीं होता, लेकिन यह विश्वास सांस्कृतिक और धार्मिक है, न कि तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्‌ध।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Vyapti (Invariable Concomitance) **का पालन करती है, लेकिन इसमें कोई ठोस तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	Hetu	**तात्त्विक आधार की कमी, केवल विश्वास आधारित दृष्टिकोण।**
37	Vyapti	**अकड़ कर चलने से कोई भौतिक प्रभाव नहीं, तात्त्विक प्रमाण है।**
38	Hetu	**बुराई के खिलाफ चेतावनी, लेकिन तात्त्विक कारणों की कमी।**
39	Hetu	**एकेश्वरवाद पर आधारित है, कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं।**
40	Vyapti	**एकेश्वरवाद के सिद्‌धांत को समझाया, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण की कमी।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में भौतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से कुछ अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई हैं, लेकिन अधिकांश में तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण की कमी है। इन विचारों को धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ा गया है, लेकिन इन्हें वैज्ञानिक या तात्त्विक रूप से सिद्‌ध नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 41

आयत का अनुवाद:

"और हमने तो इसी कुरान में तरह तरह से बयान कर दिया ताकि लोग किसी तरह समझें मगर उससे तो उनकी नफरत ही बढ़ती गई।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरान को अलग-अलग तरीकों से प्रस्तुत किया गया ताकि लोग समझ सकें, लेकिन इससे उनकी नफरत बढ़ी।**
- **हेतु (Reason): आयत में यह संकेत है कि कुरान का ज्ञान सही तरीके से प्रस्तुत नहीं हो पा रहा और लोग उससे नफरत करने लगे हैं। इसका तात्त्विक आधार यह हो सकता है कि या तो प्रस्तुतिकरण का तरीका ठीक नहीं था, या लोग इस ज्ञान को समझने के लिए तैयार नहीं थे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में कई बार धार्मिक संदेशों को पूरी तरह से समझने में लोग असमर्थ होते हैं, खासकर जब वे अपने विश्वासों से बाहर की बातों को स्वीकार नहीं कर पाते।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) के तत्व का पालन करती है, लेकिन यह प्रमाणित नहीं करती कि कुरान का प्रस्तुतिकरण या ज्ञान कोई ठोस और सर्वमान्य आधार पर आधारित था।**

आयत 42

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल उनसे) तुम कह दो कि अगर ख़ुदा के साथ जैसा ये लोग कहते हैं और माबूद भी होते तो अब तक उन माबूदों ने अर्श तक (पहुँचाने की कोई न कोई राह निकाल ली होती।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यदि अन्य माबूद होते, तो वे ख़ुदा तक पहुँचने का कोई रास्ता निकाल सकते थे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक दार्शनिक तर्क पेश करती है कि अगर अन्य माबूद होते तो वे ख़ुदा से संपर्क स्थापित करते। यह आयत केवल एक निश्चित दृष्टिकोण से बात करती है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी इस प्रकार की सोच है कि सभी देवताओं की शक्ति सीमित होती है और सर्वोच्च शक्ति का स्थान परमात्मा के पास होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Vyapti (Invariable Concomitance) **का पालन करती है, लेकिन इसका किसी तात्त्विक या वास्तविक आधार से समर्थन नहीं किया जा सकता है। यह विचार धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 43

आयत का अनुवाद:

"जो बेहूदा बातें ये लोग (ख़ुदा की निस्बत) कहा करते हैं वह उनसे बहुत बढ़के पाक व पाकीज़ा और बरतर है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो बेहूदा बातें लोग ख़ुदा के बारे में कहते हैं, वे उससे बहुत बढ़के पाक और बरतर हैं।**
- **हेतु (Reason): आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ुदा के बारे में कहे गए गलत शब्दों से वह बहुत अधिक पाक और श्रेष्ठ हैं, लेकिन यह तर्क तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): हिंदू धर्म में भी देवताओं को लेकर अनेकों दृष्टिकोण हैं, लेकिन यह केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों पर आधारित हैं, न कि तात्त्विक प्रमाणों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन नहीं करती, क्योंकि इसमें एक निराकार धार्मिक विचार प्रस्तुत किया गया है जिसका कोई तात्त्विक या व्यावहारिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 44

आयत का अनुवाद:

"सातों आसमान और ज़मीन और जो लोग इनमें (सब) उसकी तस्बीह करते हैं और (सारे जहाँन) में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी (हम्द व सना) की तस्बीह न करती हो मगर तुम लोग उनकी तस्बीह नहीं समझते, इसमें शक नहीं कि वह बड़ा बुर्दबार बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सातों आसमान, ज़मीन और अन्य सारी चीज़ें ख़ुदा की तस्बीह करती हैं, हालांकि लोग इसे नहीं समझते।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक धारणात्मक विचार प्रस्तुत करती है कि हर वस्तु ख़ुदा की स्तुति करती है, लेकिन इसका तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह विचार है कि पूरे ब्रह्मांड में एक divine presence होती है, लेकिन यह विचार धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही प्रमाणित है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) के तत्व का पालन नहीं करती है, क्योंकि इसमें तात्त्विक प्रमाण या वैज्ञानिक आधार की कमी है।**

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"और जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दरम्यिान जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते एक गहरा पर्दा डाल देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरान पढ़ते समय एक पर्दा उन लोगों के और रसूल के बीच डाल दिया जाता है जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दर्शाती है कि विश्वास का अभाव एक दीवार बना देता है, जो धार्मिक संदेशों को समझने में बाधा डालता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी बहुत से लोग धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों को नकारते हैं, जो उनके और धार्मिक संदेशों के बीच एक प्रकार की दीवार बनाते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) का पालन करती है, क्योंकि यहाँ विश्वास की कमी से संदेश समझने में अवरोध का एक सामान्य पैटर्न प्रस्तुत किया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

41	Pramana	**ज्ञान का तात्त्विक प्रमाण की कमी, सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित।**
42	Vyapti	**कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं, केवल धार्मिक दृष्टिकोण।**
43	Hetu	**तात्त्विक आधार की कमी, निराकार धार्मिक विचार प्रस्तुत किया गया।**
44	Pramana	**तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण की कमी, केवल विश्वास पर आधारित।**
45	Vyapti	**विश्वास की कमी से संदेश समझने में अवरोध का एक सामान्य पैटर्न।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक विचार और विश्वास पर आधारित कई अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई हैं। अधिकांश आयतें तात्त्विक और अनुभवजन्य प्रमाण से परे हैं और केवल धार्मिक दृष्टिकोण से तर्क करती हैं। इन विचारों को केवल विश्वासों और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ा गया है, न कि किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक सिद्धांत से।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 46
आयत का अनुवाद:
"और (गोया) हम उनके कानों में गरानी पैदा कर देते हैं कि न सुन सकें जब तुम कुरान में अपने परवरदिगार का तन्हा ज़िक्र करते हो तो कुफ्फार उलटे पावँ नफरत करके (तुम्हारे पास से) भाग खड़े होते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरान में तन्हा ज़िक्र करने पर कुफ्फार के कानों में गरानी पैदा कर दी जाती है, जिससे वे न सुन सकें।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में यह दावा किया गया है कि कुरान के ज़िक्र से विरोधियों के कानों में एक "गरानी" (अवरोध) उत्पन्न हो जाती है। इसका तात्त्विक या वैज्ञानिक समर्थन नहीं दिया गया है, बल्कि यह धार्मिक या आध्यात्मिक अवधारणा है।**

- **उदाहरण (Example): जैसे किसी व्यक्ति का अन्य धर्मों से जुड़ा व्यक्ति किसी विशेष आध्यात्मिक धारा को मानने से तटस्थ रहता है, उसी प्रकार यहाँ भी इस अवरोध का बयान किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Pramana (Valid Knowledge) **के तत्व का पालन नहीं करती, क्योंकि इसमें अवरोध उत्पन्न करने का कोई ठोस तात्त्विक आधार नहीं है। यह धार्मिक विश्वास और अनुभवों पर आधारित है।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:

"जब ये लोग तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो जो कुछ ये ग़ौर से सुनते हैं हम तो खूब जानते हैं और जब ये लोग बाहम कान में बात करते हैं तो उस वक़्त ये ज़ालिम (इमानदारों से) कहते हैं कि तुम तो बस एक (दीवाने) आदमी के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): विरोधी यह कहते हैं कि तुम तो बस एक दीवाने आदमी के पीछे पड़े हो और उस पर जादू कर दिया गया है।**
- **हेतु (Reason): यहाँ विरोधियों के तर्क को एक मनोवैज्ञानिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है, जहां वे अनजानी बातें और तर्कहीन विश्वास प्रस्तुत करते हैं। यह दावा मानसिक स्थिति और आस्थाओं पर आधारित है, न कि प्रमाणित तर्कों पर।**
- **उदाहरण (Example): किसी अन्य धर्म या विचारधारा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति अक्सर ऐसी अवैज्ञानिक बातें करते हैं, जो अपने ज्ञान की कमी को छुपाने के लिए होती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन करती है, लेकिन विरोधियों का तर्क अवैज्ञानिक और अनवस्था पर आधारित है, जो किसी तात्त्विक या व्यावहारिक आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता है।**

आयत 48

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो ये कम्बख़्त तुम्हारी निस्बत कैसी कैसी फब्तियाँ कहते हैं तो (इसी वजह से) ऐसे गुमराह हुए कि अब (हक़ की) राह किसी तरह पा ही नहीं सकते।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): विरोधी जो फब्तियाँ कहते हैं, उससे गुमराह हो गए हैं और अब वे हक़ की राह नहीं पा सकते।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दर्शाती है कि विरोधियों के तर्कों या फब्तियों ने उन्हें सच्चाई से दूर कर दिया है। यह तर्क मानसिक भ्रम और अज्ञान पर आधारित है, न कि तात्त्विक या प्रमाणित विचारों पर।**
- **उदाहरण (Example): कई बार व्यक्ति अपने पूर्वाग्रहों और भ्रांतियों के कारण सत्य को पहचानने में असमर्थ रहते हैं, जैसा कि यहां विरोधियों के संदर्भ में बताया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन विरोधियों का गुमराह होना केवल उनके मानसिक स्थिति पर आधारित है, और इसका कोई प्रमाणित वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"और ये लोग कहते हैं कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल कर) हड्डियाँ रह जाएँगें और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगें तो क्या नये सिरे से पैदा करके उठा खड़े किए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): लोग यह कहते हैं कि जब वे मरकर हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे, तो क्या वे फिर से जीवित किए जाएँगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क भौतिकवाद और शाश्वत जीवन के विचारों पर आधारित है, जो आज की वैज्ञानिक दृष्टि में गलत है। यह आयत एक धर्मिक धारणा पर आधारित है, न कि वास्तविकता पर।**
- **उदाहरण (Example): वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पुनः जीवन में लौटने की संभावना नहीं है, जैसे कि पुनर्जन्म की अवधारणा पर तर्क किया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवैध और अव्यावहारिक है।**

आयत 50

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम (मरने के बाद) चाहे पत्थर बन जाओ या लोहा या कोई और चीज़ जो तुम्हारे ख़्याल में बड़ी (सख़्त) हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): लोगों को यह बताया जाता है कि चाहे वे पत्थर, लोहा या कोई सख़्त चीज़ बन जाएं, फिर भी उन्हें पुनर्जीवित किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क क़यामत के दिन पुनर्जन्म के विषय में धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी पुनर्जन्म और कर्मफल का सिद्धांत है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असमर्थ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Prameya (Object of Knowledge) का पालन करती है, लेकिन पुनर्जन्म के विचार को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं माना जा सकता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	Pramana	**अवरोध उत्पन्न करने का कोई तात्त्विक आधार नहीं, यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
47	Hetu	**विरोधियों का तर्क अवैज्ञानिक है, जो मानसिक स्थिति पर आधारित है।**
48	Hetu	**विरोधियों के तर्कों का कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है, यह केवल भ्रम पर आधारित है।**
49	Hetu	**पुनर्जीवन का तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है।**
50	Prameya	**पुनर्जन्म का विचार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में प्रस्तुत विचार और तर्क मुख्य रूप से धार्मिक दृष्टिकोण और आस्थाओं पर आधारित हैं, जो तात्त्विक, अनुभवजन्य या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किए जा सकते हैं। इन आयतों में दर्शाए गए विचार अधिकतर सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वासों के रूप में हैं, न कि तात्त्विक या व्यावहारिक प्रमाणों पर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51
आयत का अनुवाद:
"और उसका ज़िन्दा होना दुश्वार हो वह भी ज़रुर ज़िन्दा हो गई तो ये लोग अनक़रीब ही तुम से पूछेगें भला हमें दोबारा कौन ज़िन्दा करेगा तुम कह दो कि वही (ख़ुदा) जिसने तुमको पहली मरतबा पैदा किया (जब तुम कुछ न थे) इस पर ये लोग तुम्हारे सामने अपने सर मटकाएँगें और कहेगें (अच्छा अगर होगा) तो आख़िर कब तुम कह दो कि बहुत जल्द अनक़रीब ही होगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों के पुनर्जीवन के बारे में सवाल उठाने पर, यह आयत यह दावा करती है कि वही परमात्मा, जिसने पहली बार जीवन दिया, वही पुन: जीवन देगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क आस्थावादी है, लेकिन कोई ठोस प्रमाण या व्यावहारिक कारण नहीं दिया गया। इस तर्क में सिर्फ़ धार्मिक विश्वास का समावेश है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जैसे अन्य धर्मों में भी पुनर्जन्म या जीवन के बाद के अस्तित्व के विचार होते हैं, जो केवल विश्वास या दर्शन पर आधारित होते हैं, न कि तात्त्विक प्रमाणों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क तात्त्विक आधार के बजाय धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 52

आयत का अनुवाद:

"जिस दिन ख़ुदा तुम्हें (इसराफील के ज़रिए से) बुलाएगा तो उसकी हम्दो सना करते हुए उसकी तामील करोगे (और क़ब्रों से निकलोगे) और तुम ख़्याल करोगे कि (मरने के बाद क़ब्रों में) बहुत ही कम ठहरे।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत के दिन, जब अल्लाह इसराफील के माध्यम से मृतकों को पुनः जीवित करेगा, तो वे कम समय में अपनी कब्रों से बाहर निकलेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार पुनर्जन्म या पुनर्जीवन के बारे में धार्मिक अवधारणा पर आधारित है, जो तात्त्विक या व्यावहारिक रूप से प्रमाणित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण में पुनर्जन्म या जीवन के बाद के अस्तित्व को साक्ष्य या प्रमाण के बिना माना नहीं जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) के तत्व का पालन करती है, लेकिन पुनर्जीवन का तात्त्विक आधार और प्रमाण नहीं है। इसका तर्क धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जो वास्तविकता में सिद्ध नहीं होता।**

आयत 53

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) मेरे (सच्चे) बन्दों (मोमिनों से कह दो कि वह (काफिरों से) बात करें तो अच्छे तरीक़े से (सख़्त कलामी न करें) क्योंकि शैतान तो (ऐसी ही) बातों से फसाद डलवाता है इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मोमिनों को काफिरों से अच्छे तरीके से बात करने का आदेश दिया गया है, क्योंकि शैतान फसाद उत्पन्न करने में सक्रिय होता है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है जिसमें शैतान की भूमिका को जिम्मेदार ठहराया गया है। यह एक विश्वास है, न कि तात्त्विक सत्य।**

- **उदाहरण (Example): जैसे किसी अन्य धार्मिक परंपरा में शैतान या बुरी ताकतों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, जबकि तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे मानसिक स्थिति या सामाजिक बुराइयों का परिणाम माना जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Prameya (Object of Knowledge) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क तात्त्विक आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। शैतान के विचार को वास्तविकता के रूप में समझना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ठीक नहीं है।**

आयत 54

आयत का अनुवाद:

"तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे हाल से खूब वाक़िफ है अगर चाहेगा तुम पर रहम करेगा और अगर चाहेगा तुम पर अज़ाब करेगा और (ऐ रसूल) हमने तुमको कुछ उन लोगों का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अल्लाह को अपनी इच्छाओं के आधार पर प्राणी पर रहम या अज़ाब देने का अधिकार है, और पैगंबर को किसी के कृत्य का जिम्मेदार नहीं ठहराया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, जिसमें अल्लाह के फैसले पर विश्वास किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक परंपराओं में अक्सर किसी भी कठिनाई या सुख के लिए ईश्वर की इच्छा को जिम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, न कि वास्तविकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क तात्त्विक आधार और व्यावहारिक प्रमाणों से रहित है।**

आयत 55

आयत का अनुवाद:

"और जो लोग आसमानों में है और ज़मीन पर हैं (सब को) तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है और हम ने यक़ीनन बाज़ पैग़म्बरों को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ही ने दाऊद को ज़ूबूर अता की।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अल्लाह ने कुछ पैग़म्बरों को दूसरों पर फ़ज़ीलत दी, और दाऊद को ज़ुबूर (धार्मिक ग्रंथ) दिया।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें अल्लाह के निर्णय पर विश्वास किया जाता है। लेकिन इस दावे का कोई तात्त्विक या साक्ष्य आधारित प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): किसी अन्य धर्म में भी कुछ पैग़म्बरों को विशेष स्थान या दया दी जाती है, लेकिन यह विश्वास पर आधारित होता है, जो वैज्ञानिक या तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क भी विश्वास और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, जिसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
51	Hetu	**पुनर्जीवन का तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है।**
52	Vyapti	**पुनर्जीवन का तर्क व्यावहारिक और तात्त्विक आधार से अव्यावहारिक है।**
53	Prameya	**शैतान का विचार वास्तविकता से जुड़ा नहीं है, यह केवल विश्वास पर आधारित है।**
54	Vyapti	**यह धार्मिक आस्था और इच्छा पर आधारित है, जिसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
55	Hetu	**यह विश्वास पर आधारित है, न कि साक्ष्य या तात्त्विक सिद्धांत पर।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार और तर्क अधिकतर धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनमें तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण का अभाव है। इन आयतों में पुनर्जीवन, शैतान, और ईश्वर की इच्छाओं के बारे में जो विचार

दिए गए हैं, वे केवल धार्मिक आस्थाओं पर आधारित हैं, जिन्हें तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि ख़ुदा के सिवा और जिन लोगों को माबूद समझते हो, उनको (वक़्त पड़े) पुकार के तो देखो कि वह न तो तुम से तुम्हारी तकलीफ ही दफा कर सकते हैं और न उसको बदल सकते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अन्य इष्ट देवताओं के होने का दावा किया गया है, लेकिन यह आयत यह कहती है कि वे तुम्हारी तकलीफ को दूर करने या बदलने में सक्षम नहीं हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क निष्कर्ष पर आधारित है कि किसी भी अन्य देवता को अल्लाह के समान शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, हालांकि यह दावा सिर्फ धार्मिक विश्वास पर आधारित है। यह व्यावहारिक रूप से सिद्ध नहीं हो सकता है क्योंकि किसी अन्य देवता की असमर्थता का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे किसी अन्य धर्म में विभिन्न देवताओं के बारे में दावा किया जाता है कि वे शक्ति के स्रोत हैं, लेकिन इसके उलट यह आयत उन देवताओं को असमर्थ मानती है, जो केवल धार्मिक विचार और विश्वास पर आधारित हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क व्यावहारिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। धार्मिक विश्वासों को तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

आयत 57

आयत का अनुवाद:

"ये लोग जिनको मुशरेकीन (अपना ख़ुदा समझकर) इबादत करते हैं वह खुद अपने परवरदिगार की कुरबत के ज़रिए ढूँढते फिरते हैं कि (देखो) इनमें से कौन ज़्यादा कुरबत रखता है और उसकी रहमत की उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते हैं इसमें शक नहीं कि तेरे परवरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि अन्य देवताओं की पूजा करने वाले लोग अपनी पूजा से अल्लाह के करीब जाने की कोशिश करते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क विशुद्ध रूप से विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह विचार सिद्ध नहीं किया जा सकता कि किसी भी अन्य इष्ट देवता की पूजा अल्लाह के करीब जाने का तरीका है।**
- **उदाहरण (Example): अन्य धार्मिक परंपराओं में भी इसी तरह की पूजा की जाती है, लेकिन यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Prameya (Object of Knowledge) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, न कि तात्त्विक प्रमाणों पर।**

आयत 58

आयत का अनुवाद:

"और कोई बस्ती नहीं है मगर रोज़ क़यामत से पहले हम उसे तबाह व बरबाद कर छोड़ेगें या (नाफरमानी) की सज़ा में उस पर सख़्त से सख़्त अज़ाब करेगें (और) ये बात किताब (लौहे महफूज़) में लिखी जा चुकी है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि हर बस्ती को क़यामत से पहले सज़ा दी जाएगी।**
- **हेतु (Reason): यह विचार सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता क्योंकि यह एक धार्मिक कथन है, न कि एक तात्त्विक या वैज्ञानिक सत्य। हर बस्ती को क़यामत से पहले सज़ा देना एक सामान्यीकरण है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता।**
- **उदाहरण (Example): दुनिया में ऐसी कई सभ्यताएँ और समाज हैं, जिन्होंने विकास किया है और अब तक ऐसी किसी सजा का सामना नहीं किया। इस प्रकार यह तर्क व्यावहारिक रूप से गलत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) के तत्व का पालन करती है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं है। यह विचार सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।**

आयत 59

आयत का अनुवाद:

"और हमें मौजिज़ात भेजने से किसी चीज़ ने नहीं रोका मगर इसके सिवा कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया और हमने क़ौमे समूद को (मौजिज़े से) ऊँटनी अता की जो (हमारी कुदरत की) दिखाने वाली थी तो उन लोगों ने उस पर ज़ुल्म किया यहाँ तक कि मार डाला और हम तो मौजिज़े सिर्फ डराने की ग़रज़ से भेजा करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि मौजिज़े केवल डराने के लिए भेजे जाते हैं और पहले के लोगों ने इन्हें झुठलाया था।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो वास्तविकता के बजाय विश्वास पर निर्भर करता है। यह विचार तात्त्विक रूप से गलत है क्योंकि मौजिज़ों को भय और डर का प्रतीक मानना एक एकपक्षीय दृष्टिकोण है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे किसी अन्य धर्म में भी चमत्कारों या विशेष घटनाओं को प्रतीकात्मक रूप में देखा जाता है, जो केवल विश्वास पर आधारित हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क बिना व्यावहारिक या तात्त्विक प्रमाणों के है।**

आयत 60

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) वह वक़्त याद करो जब तुमसे हमने कह दिया था कि तुम्हारे परवरदिगार ने लोगों को (हर तरफ से) रोक रखा है कि (तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और हमने जो ख़्वाब तुमको दिखलाया था तो बस उसे लोगों (के इमान) की आज़माइश का ज़रिया ठहराया था और (इसी तरह) वह दरख़्त जिस पर कुरान में लानत की गई है और हम बावजूद कि उन लोगों को (तरह तरह) से डराते हैं मगर हमारा डराना उनकी सख़्त सरकशी को बढ़ाता ही गया।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह ने एक ख़्वाब दिखाकर लोगों को इमानी परीक्षण में डाला, और डराने के बावजूद उनका मन नहीं बदला।**

- **हेतु (Reason): यह विचार एक सार्वभौमिक तात्त्विक सत्य नहीं है क्योंकि यह एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से संबंधित है। अल्लाह के द्वारा दिखाए गए ख़्वाब और डराने के बावजूद लोगों के मन न बदलने का तर्क व्यावहारिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जैसे हर समाज में विश्वासों और दृष्टिकोणों का प्रभाव अलग-अलग होता है, इसलिए किसी के विश्वास को बलात्कारी रूप से बदलने का कोई प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Vyapti (Invariable Concomitance) **का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क व्यावहारिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	Hetu	**तर्क विश्वास पर आधारित है, प्रमाणित नहीं है।**
57	Prameya	**यह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, तात्त्विक प्रमाणों का अभाव है।**
58	Vyapti	**यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।**
59	Hetu	**तर्क विश्वास पर आधारित है, कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं है।**
60	Vyapti	**यह व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में प्रस्तुत तर्क और विचार विश्वासों और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो तात्त्विक या व्यावहारिक प्रमाणों से रहित हैं। इन आयतों में जो विचार दिए गए हैं, वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकते।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 61
आयत का अनुवाद:

"और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया मगर इबलीस वह (गुरुर से) कहने लगा कि क्या मैं ऐसे शख़्स को सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि इबलीस ने आदम को सजदा करने से इंकार किया क्योंकि वह मिट्टी से पैदा हुआ था।**
- **हेतु (Reason): इबलीस का तर्क यह था कि आदम का जन्म मिट्टी से हुआ है, और यह तर्क एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित है, जो तात्त्विक रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता। आदम के जन्म का तरीका किसी के सम्मान या पूजा की योग्यतता को निर्धारित नहीं करता है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे आजकल सामाजिक और सांस्कृतिक विचारधाराओं में कुछ लोग किसी व्यक्ति को जन्म, जाति, या रंग के आधार पर कमतर मानते हैं, लेकिन यह तर्क तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) के तत्व का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क सांस्कृतिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता।**

आयत 62

आयत का अनुवाद:

"और (शेख़ी से) बोला भला देखो तो सही यही वह शख़्स है जिसको तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है अगर तू मुझे क़यामत तक की मोहलत दे तो मैं (दावे से कहता हूँ कि) कम लोगों के सिवा इसकी नस्ल की जड़ काटता रहूँगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इबलीस यह कहता है कि अगर उसे क़यामत तक की मोहलत मिलती है, तो वह आदम की नस्ल की जड़ काट देगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक छद्म तर्क है, क्योंकि इबलीस का दावा आदम की नस्ल को नष्ट करने का संभवतः अव्यावहारिक है। यदि कोई शक्ति और सामर्थ्य यह नहीं सिद्ध कर सकती कि वह किसी की नस्ल को पूरी तरह से नष्ट कर सकती है, तो इसका तर्क तात्त्विक रूप से दुर्बल है।**

- **उदाहरण (Example): जैसे कई अन्य आदर्शों में इसे माना जाता है कि कोई व्यक्ति अपने प्रतिद्वंद्वी को नष्ट करने का दावा करता है, लेकिन वास्तविकता में यह किसी भी अस्तित्व को पूरी तरह से नष्ट करने में असमर्थ है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Hetu (Reason) **का पालन करती है, लेकिन इबलीस का दावा वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य में तात्त्विक रूप से असमर्थ है।**

आयत 63

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा ने फरमाया चल (दूर हो) उनमें से जो शख़्स तेरी पैरवी करेगा तो (याद रहे कि) तुम सबकी सज़ा जहन्नुम है और वह भी पूरी पूरी सज़ा है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि इबलीस और उसके अनुयायी सबकी सज़ा जहन्नुम है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता क्योंकि यह एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। यह निष्कर्ष कुछ समुदायों में तात्त्विक रूप से असहज हो सकता है, क्योंकि यह विश्वास पर आधारित है, न कि साक्ष्य या प्रमाण पर।**
- **उदाहरण (Example): यदि हम इसे अन्य धार्मिक विश्वासों के साथ तुलना करें, तो कई धर्मों में स्वर्ग और नरक के विचार अलग-अलग होते हैं, जो तात्त्विक रूप से व्यक्तिपरक हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत** Vyapti (Invariable Concomitance) **का पालन करती है, लेकिन यह किसी विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू करना तात्त्विक रूप से गलत है।**

आयत 64

आयत का अनुवाद:

"और इसमें से जिस पर अपनी (चिकनी चुपड़ी) बात से क़ाबू पा सके वहां और अपने (चेलों के लश्कर) सवार और पैदल (सब) से चढ़ाई कर और माल और औलाद में उनके साथ साझा करे और उनसे (खूब झूटे) वायदे कर और शैतान तो उनसे जो वायदे करता है धोखे (की टट्ट्) के सिवा कुछ नहीं होता।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि इबलीस अपने अनुयायियों से धोखे से वायदे करता है और उन्हें झूठे वादों में फंसाता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति यदि झूठे वादे करता है तो वह धोखा ही होता है। इस आयत का तर्क सही और स्पष्ट है क्योंकि यह जीवन में व्यावहारिक रूप से देखा जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): जैसे कई राजनीतिक और सामाजिक नेता झूठे वादे करते हैं, जिससे लोग भ्रमित होते हैं, और इसका वास्तविक प्रभाव समुदाय पर होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Hetu (Reason) का पालन करती है और इसका तर्क व्यावहारिक दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि यह धोखे और झूठे वादों के बारे में बात करती है।**

आयत 65
आयत का अनुवाद:
"बेशक जो मेरे (ख़ास) बन्दे हैं उन पर तेरा ज़ोर नहीं चल सकता और कारसाज़ी में तेरा परवरदिगार काफी है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि इबलीस अपने अनुयायियों पर शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, और अल्लाह ही अपने बन्दों को शक्ति प्रदान करता है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन यह निश्चित रूप से तात्त्विक दृष्टिकोण से सत्यापित नहीं किया जा सकता। यह विचार विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण के आधार पर सही हो सकता है, लेकिन इसे अन्य दर्शनिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जैसे विभिन्न धर्मों में यह विश्वास किया जाता है कि ईश्वर अपनी शक्ति से भक्तों की रक्षा करता है, हालांकि यह किसी वैज्ञानिक प्रमाण पर आधारित नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Pramana (Valid Knowledge) का पालन करती है, लेकिन इसका तर्क किसी वैध ज्ञान या प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि यह धार्मिक विश्वास पर निर्भर करता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	Hetu	**तर्क व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित है, तात्त्विक रूप से गलत।**
62	Hetu	**इबलीस का दावा व्यावहारिक रूप से असमर्थ है।**
63	Vyapti	**यह धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।**
64	Hetu	**यह तर्क व्यावहारिक दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि यह धोखे और झूठे वादों के बारे में है।**
65	Pramana	**यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में जो तर्क दिए गए हैं, वे मुख्यतः धार्मिक विश्वासों और दृष्टिकोण पर आधारित हैं। कुछ आयतों में तात्त्विक दृष्टिकोण से सही तर्क प्रस्तुत किया गया है, लेकिन अधिकांश तर्क विश्वास पर आधारित हैं, जो अन्य तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किए जा सकते।

आयत 66
आयत का अनुवाद:
"लोगों, तुम्हारा परवरदिगार वह (क़ादिरे मुत्तलिक़) है जो तुम्हारे लिए समंदर में जहाजों को चलाता है ताकि तुम उसके फज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो, इसमें शक नहीं कि वह तुम पर बड़ा मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में कहा गया है कि अल्लाह समंदर में जहाजों को चलाता है ताकि लोग उसकी कृपा से अपनी जीविका की तलाश कर सकें।
- **हेतु (Reason):** यह कथन एक विश्वास आधारित तर्क है और इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। समुद्र में जहाजों की यात्रा और समंदर की स्थितियां मौसम और प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर करती हैं, न कि अल्लाह की कृपा पर।
- **उदाहरण (Example):** आधुनिक विज्ञान और भौतिकी के अनुसार समुद्र में जहाजों के संचालन के लिए गति, गुरुत्वाकर्षण, जलवायु और तकनीकी प्रणाली का प्रभाव होता है, न कि किसी दिव्य शक्ति का।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय (Object of Knowledge) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका तर्क ऐतिहासिक और भौतिक प्रमाणों से समर्थित नहीं है।

आयत 67

आयत का अनुवाद:

"और जब समंदर में कभी तुम को कोई तकलीफ पहुँचे तो जिनकी तुम इबादत किया करते थे, ग़ायब हो गए, मगर बस वही (एक ख़ुदा) याद रहता है। उस पर भी जब ख़ुदा ने तुम को छुटकारा देकर खुशकी तक पहुँचा दिया तो फिर तुम इससे मुँह मोड़ बैठते हो और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जब मुश्किलें आती हैं तो लोग केवल अल्लाह को याद करते हैं, लेकिन जैसे ही राहत मिलती है, वे उसे भूल जाते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क एक सामान्य मानव व्यवहार का चित्रण करता है, जो कई सभ्यताओं और संस्कृतियों में पाया जाता है।
- **उदाहरण (Example):** जब लोग किसी संकट का सामना करते हैं, तो वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, लेकिन बाद में जब संकट दूर हो जाता है, तो वे अपनी प्रार्थनाओं और ईश्वर की याद को भूल जाते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण (Valid Knowledge) के सिद्धांत का पालन करती है क्योंकि यह सामान्य मानव व्यवहार पर आधारित है, जिसे अनुभवजन्य रूप से सिद्ध किया जा सकता है।

आयत 68

आयत का अनुवाद:

"तो क्या तुम उसको इस का भी इत्मिनान हो गया कि वह तुम्हें खुश्की तरफ (ले जाकर) (क़ारुन की तरह) ज़मीन में धंसा दे या तुम पर (क़ौम) लूत की तरह पत्थरों का मेंह बरसा दे, फिर (उस वक्त) तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह कभी भी किसी समुदाय को सजा दे सकता है, जैसे क़ारुन और क़ौम लूत के साथ हुआ था।**
- **हेतु (Reason): इस कथन का तात्त्विक आधार सही नहीं है, क्योंकि यह केवल विश्वास आधारित है और किसी ऐतिहासिक घटना या प्रमाण पर आधारित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): प्राकृतिक आपदाएं, जैसे भूकंप या बाढ़, जो जीवन और पर्यावरण को प्रभावित करती हैं, इनका कारण मानव व्यवहार नहीं है, बल्कि यह भूगर्भीय और जलवायु परिवर्तन से संबंधित हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें एक विशिष्ट कारण (अल्लाह की सजा) को अप्रत्याशित और अभूतपूर्व घटनाओं से जोड़ दिया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है।**

आयत 69

आयत का अनुवाद:

"या तुमको इसका भी इत्मिनान हो गया कि फिर तुमको दोबारा इसी समंदर में ले जाएगा, उसके बाद हवा का एक ऐसा झोका जो (जहाज के) परख़चे उड़ा दे, तुम पर भेजे, फिर तुम्हें तुम्हारे कुफ्र की सजा में डुबा मारे, फिर तुम किसी को (ऐसा हिमायती) न पाओगे जो हमारा पीछा करे और (तुम्हें छोड़ा जाए)।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जब तुम अपनी गलतियों से नहीं सीखते हो, तो अल्लाह तुम्हें दंडित कर सकता है, जैसे समुद्र में डुबोकर या आंधी भेजकर।**

- **हेतु (Reason): यह तर्क एक सामान्य विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है। प्राकृतिक घटनाओं को केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ना एक तर्कहीन दृष्टिकोण है।**
- **उदाहरण (Example): समुद्र और आंधी जैसी प्राकृतिक घटनाएं भौतिकी और मौसम विज्ञान पर आधारित हैं, और इनका कोई सम्बन्ध किसी दैवीय दंड से नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत Vyapti (Invariable Concomitance) का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें एक अलौकिक कारण (दंड) को प्राकृतिक घटनाओं से जोड़ा गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में तर्क के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग किया गया है, लेकिन कुछ आयतें जैसे आयत 66, 68, और 69 तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर हैं और इन्हें प्रमाण या अनुभव से सिद्ध नहीं किया जा सकता। जबकि आयत 67 वास्तविक जीवन और सामान्य अनुभव पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार अधिक सुसंगत है।

कुरान के अनुसार आदम की उत्पत्ति - विश्लेषण और तार्किक समीक्षा

सूखी मिट्टी से इंसान की रचना

अनुवाद:
"हमने इंसान को सूखी मिट्टी से बनाया जो आवाज़ करती है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा: यह कथन कहता है कि अल्लाह ने आदम को सूखी मिट्टी से बनाया।**
- **हेतु: सूखी मिट्टी से जीवन उत्पन्न करने का यह विचार अलौकिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो भौतिकी और जीवविज्ञान के सिद्धांतों के विपरीत है। जीवन की उत्पत्ति जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं से होती है, न कि सूखी मिट्टी से।**
- **उदाहरण: आधुनिक जीवविज्ञान में जीवन की उत्पत्ति को रासायनिक प्रतिक्रियाओं और विकासवादी प्रक्रियाओं से समझाया गया है।**

- **निगमनः यह आयत प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांतों का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें दी गई जानकारी वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ मेल नहीं खाती।**

आत्मा का फूंका जाना

अनुवादः
"हमने इंसान को अपनी छवि में बनाया और उसमें अपनी आत्मा फूंकी।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana) और अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञाः यह आयत कहती है कि अल्लाह ने आदम में अपनी आत्मा फूंकी।**
- **हेतुः आत्मा का अस्तित्व दार्शनिक और धार्मिक धारणा पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरणः आत्मा के विषय में कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद नहीं है; यह मुख्यतः विश्वास पर आधारित है।**
- **निगमनः यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि आत्मा का अस्तित्व भौतिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

आदम का बगीचे में रहना

अनुवादः
"हमने आदम को एक बगीचे में रखा।"

चुना गया न्याय तत्वः व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञाः आयत कहती है कि आदम को एक बगीचे में रखा गया।**
- **हेतुः बगीचे में रहने का यह विचार धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।**

- **उदाहरण: बगीचों का उल्लेख कई धर्मों में मिलता है, लेकिन यह सांस्कृतिक या प्रतीकात्मक दृष्टिकोण है, न कि भौतिक वास्तविकता।**
- **निगमन: यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि बगीचे में रहने की बात को वैज्ञानिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

आदम और उसकी पत्नी का निर्माण

अनुवादः
"हमने आदम और उसकी पत्नी को पैदा किया।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana) और उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा: यह आयत आदम और उसकी पत्नी की उत्पत्ति का उल्लेख करती है।**
- **हेतु: मानव विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक चयन और क्रमिक विकास पर आधारित है, न कि किसी चमत्कारी उत्पत्ति पर।**
- **उदाहरण: जीवविज्ञान में मानव का विकास करोड़ों वर्षों में क्रमबद्ध प्रक्रिया के माध्यम से हुआ है।**
- **निगमन: यह आयत प्रमाण और उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि आदम और उसकी पत्नी की उत्पत्ति का धार्मिक दृष्टिकोण वैज्ञानिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

नाक और रक्त से रचना

अनुवादः
"हमने तुम्हें नाक और रक्त की थोड़ी मात्रा से बनाया।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा: आयत के अनुसार, आदम और उसकी संतान की रचना नाक और रक्त से हुई।**
- **हेतु: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मानव शरीर डीएनए, प्रोटीन, और कोशिकाओं के संयोजन से बना है, न कि केवल नाक और रक्त से।**

- **उदाहरण: जैविक प्रक्रियाओं में डीएनए और कोशिकीय संरचना की भूमिका प्रमुख है, जबकि नाक और रक्त मात्र प्रतीकात्मक हैं।**
- **निगमन: यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका वैज्ञानिक आधार प्रमाणित नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:
कुरान में आदम की उत्पत्ति के संबंध में दी गई जानकारी मुख्यतः धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। न्याय दर्शन के तत्वों, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और व्याप्ति के आधार पर इन आयतों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि ये वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रमाणों के अनुरूप नहीं हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से इन आयतों का महत्व हो सकता है, लेकिन तार्किक और वैज्ञानिक प्रमाणों के बिना इन्हें सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार करना कठिन है।

आयत 70 का विश्लेषण और तार्किक समीक्षा (न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से)

आयत का अनुवाद:

"और हमने यक़ीनन आदम की औलाद को इज़्ज़त दी और ख़ुश्की और तरी में उनको (जानवरों कश्तियों के ज़रिए) लिए फिरे और उन्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दी और अपने बहुतेरे मख़लूक़ात पर उनको अच्छी ख़ासी फज़ीलत दी।" (सूरत अल-इसरा, 17:70)

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya), प्रमाण (Pramana), और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह ने आदम की औलाद को सम्मान दिया और उन्हें समुंदर की यात्रा और अच्छे भोजन प्रदान किए, साथ ही उन्हें अन्य प्राणियों से अधिक उच्च दर्जा दिया।**
- **हेतु (Reason): यह कथन एक धार्मिक विश्वास को दर्शाता है जो जीवन की आदम की औलाद के लिए विशेष स्थिति को प्रस्तुत करता है, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह एक सांस्कृतिक या धार्मिक विचारधारा पर आधारित है, जो नैतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत है, लेकिन यह तार्किक और भौतिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण (Example): आदम की औलाद को "इज़्ज़त दी गई" और "जानवरों के समान कश्तियों के ज़रिए समुंदर में यात्रा करने का अवसर दिया गया" जैसे विचार ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टिकोण से हो सकते हैं, लेकिन यह शारीरिक या भौतिक प्रमाणों से नहीं सिद्ध हो सकते।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें दी गई जानकारी के लिए कोई वैज्ञानिक आधार या भौतिक प्रमाण नहीं है। यह आयत तर्क और विज्ञान की सैद्धांतिक प्रक्रिया से मेल नहीं खाती, क्योंकि आदम और उसकी औलाद के लिए दी गई विशेष स्थिति और इज़्ज़त को व्याख्यायित करने में भौतिक प्रमाण का अभाव है।**

विश्लेषण में व्याप्ति (Vyapti) का उपयोग:

इस आयत के द्वारा दी गई विशेष स्थिति को यदि हम व्याप्ति (Invariable Concomitance) के सिद्धांत से जांचें, तो यह स्पष्ट होता है कि इस धार्मिक विचार को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। आदम और उसकी औलाद की विशेष स्थिति और कश्तियों में यात्रा करने के विचार को सामान्य मानवीय अनुभव और ऐतिहासिक प्रमाण से नहीं जोड़ा जा सकता। इसके अतिरिक्त, यह विचार एक धार्मिक दृष्टिकोण है जो अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी पाया जाता है, परंतु इसे भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

प्रमेय और प्रमाण:

आयत का कथन आदम और उसकी औलाद को दी गई विशेष स्थिति (इज़्ज़त) पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। हम जीवविज्ञान और मानवविज्ञान के माध्यम से यह नहीं कह सकते कि आदम और उसकी औलाद को "सभी मख़लूक़ात से अधिक फ़ज़ीलत दी गई" थी, क्योंकि जीवन की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया वैज्ञानिक रूप से रासायनिक और जैविक है, न कि एक विशेष धार्मिक प्रक्रिया।

समग्र निष्कर्ष:

इस आयत का वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हुए, यह स्पष्ट होता है कि इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। आदम की औलाद को दी गई विशेष स्थिति और इज़्ज़त का विचार धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसे तर्क और विज्ञान के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। इस आयत का संदेश सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन यह न्याय दर्शन के अनुसार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पूरी तरह से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71

आयत का अनुवाद: "उस दिन (को याद करो) जब हम तमाम लोगों को उन पेशवाओं के साथ बुलाएँगें तो जिसका नामए अमल उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह लोग (खुश खुश) अपना नामए अमल पढ़ने लगेगें और उन पर रेशा बराबर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में कहा गया है कि लोग अपने अच्छे कर्मों का लेखा दाहिने हाथ में पाएंगे और उनके साथ कोई अन्याय नहीं होगा।
- हेतु (Reason): यह दावा धर्म और विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है। कर्मों का लेखा और उनके परिणामों का निर्धारण सिर्फ धार्मिक विश्वास पर निर्भर करता है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत से मेल नहीं खाता।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत है, लेकिन यह किसी भौतिक प्रमाण से नहीं सिद्ध होता, बल्कि यह आस्थाओं पर आधारित है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें दिए गए दावे बिना किसी वास्तविक प्रमाण के हैं और यह सिर्फ विश्वास का विषय है।

आयत 72

आयत का अनुवाद: "और जो शख़्स इस (दुनिया) में (जान बूझकर) अंधा बना रहा तो वह आख़िरत में भी अंधा ही रहेगा और (नजात) के रास्ते से बहुत दूर भटका सा हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में कहा गया है कि जो व्यक्ति इस दुनिया में जानबूझकर अंधा बनता है, वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा।

- हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। शारीरिक अंधेपन और मानसिक अंधेपन के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है जो तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया जा सके।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी के आंतरिक अंधेपन को केवल दृष्टिहीनता से जोड़ने का कोई सिद्धांत नहीं है। यह अधिकतर मानसिक और आस्थाओं से संबंधित होता है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसके दावे का कोई ठोस या वैज्ञानिक आधार नहीं है और यह आस्थाओं पर आधारित है।

आयत 73

आयत का अनुवादः "और (ऐ रसूल) हमने तो (कुरान) तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा अगर चे लोग तो तुम्हें इससे बहकाने ही लगे थे ताकि तुम कुरान के अलावा फिर (दूसरी बातों का) इफ़तेरा बाँधों और (जब तुम ये कर गुज़रते उस वक़्त ये लोग तुम को अपना सच्चा दोस्त बना लेते।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि लोग नबी को बहकाने की कोशिश करते थे ताकि वह कुरान के अलावा कुछ और इजाद करें।
- हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई ऐतिहासिक या प्रमाणिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। यह आरोप एक निश्चित समय और स्थान के संदर्भ में हो सकता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक या प्रमाणित रूप में प्रस्तुत करना तार्किक दृष्टिकोण से कठिन है।
- उदाहरण (Example): ऐतिहासिक प्रमाणों में ऐसे संदर्भ बहुत कम हैं जो इस तरह की घटनाओं को सिद्ध करते हों, और यह आमतौर पर विश्वास पर आधारित है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें केवल विश्वास और धार्मिक संदर्भ का उल्लेख किया गया है, जो वैज्ञानिक या ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं है।

आयत 74

आयत का अनुवाद: "और अगर हम तुमको साबित क़दम न रखते तो ज़रुर तुम भी ज़रा (ज़हूर) झुकने ही लगते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि अगर ईश्वर नबी को मजबूत कदम न देता, तो वह भी गलती करने लगते।**
- **हेतु (Reason): यह दावा सिर्फ विश्वास पर आधारित है, और इसे प्रमाणित या व्यावहारिक दृष्टिकोण से सत्यापित करना असंभव है। यह विचार तर्क के खिलाफ है क्योंकि किसी भी व्यक्ति के मानसिक या आंतरिक मार्गदर्शन को बाहरी शक्ति से जोड़ना साक्ष्य से परे है।**
- **उदाहरण (Example): विज्ञान और दर्शन में, किसी व्यक्ति की सोच और निर्णय को बाहरी प्रभाव से जोड़ने का कोई ठोस आधार नहीं है। हर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अनुभव और मानसिक स्थिति के आधार पर निर्णय करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह विचार केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

आयत 75

आयत का अनुवाद: "और (अगर तुम ऐसा करते तो) उस वक़्त हम तुमको ज़िन्दगी में भी और मरने पर भी दोहरे (अज़ाब) का मज़ा चखा देते और फिर तुम को हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न मिलता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि अगर नबी ने किसी मार्गदर्शन से विचलन किया होता, तो उसे जीवन और मृत्यु में दोहरे दंड मिलते और कोई मदद नहीं मिलती।**
- **हेतु (Reason): यह बयान बिना किसी भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। धार्मिक विश्वास और दंड की अवधारणाएं साक्ष्य के बिना नहीं साबित की जा सकतीं।**
- **उदाहरण (Example): जीवन में किसी के साथ अन्याय होने की स्थिति में, उसका समाधान कानूनी और सामाजिक ढांचे के माध्यम से होता है, न कि केवल धार्मिक आदेश से।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बिना किसी प्रमाण के दंड की अवधारणा प्रस्तुत करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	प्रमेय	दाहिने हाथ में कर्मों का लेखा देने का दावा बिना प्रमाण के है।
72	प्रमेय	अंधेपन का शाब्दिक और धार्मिक अर्थ बिना तर्क के दिया गया है।
73	प्रमाण	नबी को बहकाने की अवधारणा केवल विश्वास पर आधारित है।
74	प्रमाण	नबी की सोच को बाहरी प्रभाव से जोड़ने का विचार तर्कसंगत नहीं है।
75	प्रमेय, प्रमाण	दंड की अवधारणा बिना प्रमाण और साक्ष्य के प्रस्तुत की गई है।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में दिए गए विचार तर्क और प्रमाण के अभाव में प्रस्तुत किए गए हैं। ये धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में स्वीकार्य हो सकते हैं, लेकिन इन्हें तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित करना कठिन है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों (जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क) के अनुसार, इन आयतों में कोई ठोस तात्त्विक और वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 76

आयत का अनुवाद: "और ये लोग तो तुम्हें (सर ज़मीन मक्के) से दिल बर्दाश्त करने ही लगे थे ताकि तुम को वहाँ से (शाम की तरफ) निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे में ये लोग चन्द रोज़ के सिवा ठहरने भी न पाते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि लोग नबी को मक्का से निकालने के लिए तैयार हो गए थे, और अगर ऐसा होता तो वे जल्दी ही पछता जाते।
- **हेतु (Reason):** यह दावा एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या साक्ष्य नहीं प्रस्तुत किया गया है। यह सिर्फ विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जहां लोगों ने विवादों को अपने समय और संदर्भ में खत्म किया, लेकिन इसे स्थायी परिणाम के रूप में प्रस्तुत करना न्यायसंगत नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें सिर्फ विश्वास और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है, लेकिन इसका कोई अनुभवजन्य या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 77

आयत का अनुवाद: "तुमसे पहले जितने रसूल हमने भेजे हैं उनका बराबर यही दस्तूर रहा है और जो दस्तूर हमारे (ठहराए हुए) हैं उनमें तुम तग़य्युर तबद्दुल {रद्दो बदल} न पाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि नबी को भेजने का तरीका हर समय समान रहा है और किसी भी समय इसमें बदलाव नहीं होगा।
- **हेतु (Reason):** यह दावा ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन बिना किसी ठोस प्रमाण के। यदि इतिहास में किसी विशेष तरीके का पालन किया गया, तो यह इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करना न्यायसंगत नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में ऋषि और मुनियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया रही है, और इसका तरीक़ा हर समय और स्थान पर बदल सकता था, जो इस आयत से मेल नहीं खाता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सार्वभौमिक सत्य के रूप में एक निश्चित पद्धति का वर्णन करती है, बिना किसी साक्ष्य के।

आयत 78

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) सूरज के ढलने से रात के अँधेरे तक नमाज़े ज़ोहर, अ०, मग़रिब, इशा पढ़ा करो और नमाज़ सुबह (भी) क्योंकि सुबह की नमाज़ पर (दिन और रात दोनों के फरिश्तों की) गवाही होती है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत नमाजों को विशेष समयों में पढ़ने की सलाह देती है और विशेष रूप से सुबह की नमाज को दिन और रात दोनों के फरिश्तों की गवाही से जोड़ती है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। नमाजों के समय और उनके महत्व को धार्मिक संदर्भ में ही स्वीकार किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी पूजा और ध्यान के समय का महत्व है, लेकिन इसका आधार तर्क और विज्ञान नहीं, बल्कि श्रद्धा और आस्था है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसमें विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण के अलावा कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 79

आयत का अनुवाद: "और रात के ख़ास हिस्से में नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करो ये सुन्नत तुम्हारी खास फज़ीलत हैं क़रीब है कि क़यामत के दिन ख़ुदा तुमको मक़ामे महमूद तक पहुँचा दे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत तहज्जुद की नमाज को विशेष महत्व देती है और इसे नबी की खास फज़ीलत के रूप में प्रस्तुत करती है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है। तर्क और विज्ञान में इस प्रकार की विशेषता को प्रमाणित करने का कोई तरीका नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में साधना और ध्यान के महत्व को सिद्ध किया जाता है, लेकिन इसका आधार व्यक्ति की आस्था और मानसिक स्थिति पर आधारित है, न कि तर्क और विज्ञान पर।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका आधार केवल आस्था है, और कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 80

आयत का अनुवाद: "और ये दुआ माँगा करो कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझे (जहाँ) पहुँचा अच्छी तरह पहुँचा और मुझे (जहाँ से निकाल) तो अच्छी तरह निकाल और मुझे ख़ास अपनी बारगाह से एक हुकूमत अता फरमा जिस से (हर क़िस्म की) मदद पहुँचे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में नबी से कहा गया है कि वह एक विशेष दुआ करें कि उन्हें ईश्वर की बारगाह से शक्ति और मदद मिले।**
- **हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है। दुआ का प्रभाव धार्मिक विश्वास से जुड़ा है, जो कि व्यक्तिगत और सांस्कृतिक संदर्भ पर निर्भर करता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में आत्मा और ब्रह्म के बीच संबंध के लिए दुआ और प्रार्थना का महत्व है, लेकिन इसे तर्क और विज्ञान से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह आस्था और विश्वास पर आधारित है, बिना किसी ठोस प्रमाण के।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
76	**प्रमाण**	**ऐतिहासिक दावे के बिना मक्का से निकलने का कथन।**
77	**प्रमेय**	**हर रसूल को भेजने की पद्धति को सार्वभौमिक रूप से प्रस्तुत करना।**
78	**प्रमेय**	**नमाजों के समय और उनकी विशेषता को केवल विश्वास से जोड़ना।**

79	**प्रमेय**	**तहज्जुद की नमाज को विशेष फ़ज़ीलत देने का दावा बिना प्रमाण के।**
80	**प्रमेय**	**दुआ की शक्ति को केवल आस्था पर आधारित दिखाना।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जिन दावों का उल्लेख किया गया है, वे बिना तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक आधार के प्रस्तुत किए गए हैं। ये विचार आस्था और धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में स्वीकार्य हो सकते हैं, लेकिन इनका तार्किक और प्रमाणिक समर्थन न होने के कारण न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) कह दो कि (दीन) हक़ आ गया और बातिल नेस्तनाबूद हुआ इसमें शक नहीं कि बातिल मिटने वाला ही था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दावा करती है कि हक़ (सत्य) आ चुका है और बातिल (असत्य) नष्ट हो चुका है, और असत्य का नष्ट होना अनिवार्य है।
- **हेतु (Reason):** यह कथन एक विश्वास आधारित दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन इसके पीछे कोई ठोस प्रमाण या तार्किक आधार नहीं है। यह एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन क्या असत्य का नष्ट होना हमेशा अनिवार्य होता है, यह प्रमाणित नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी सत्य की प्रधानता है, लेकिन सत्य और असत्य के बीच संबंध को हर समय या हर स्थिति में एक जैसा नहीं माना गया है। हर दार्शनिक प्रणाली में असत्य का नष्ट होना अलग-अलग तरीकों से व्यक्त किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह असत्य के नष्ट होने को एक बिना प्रमाणित और निर्विवाद सत्य के रूप में प्रस्तुत करती है।

आयत 82

आयत का अनुवाद: "और हम तो कुरान में वही चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए (सरासर) शिफा और रहमत है (मगर) नाफरमानों को तो घाटे के सिवा कुछ बढ़ाता ही नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरान को मोमिनों के लिए शिफा और रहमत बताया गया है, लेकिन नाफरमानों के लिए यह घाटे का कारण बनता है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा कुरान की प्रभाविता पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है। किसी ग्रंथ का प्रभाव उसके पाठक के मानसिक और आस्थात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, न कि सार्वभौमिक रूप से सही होने पर।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में वेदों और शास्त्रों का सम्मान किया जाता है, लेकिन यह कभी भी किसी विशेष शख़्स या समुदाय के लिए उतना प्रभावशाली नहीं होता, जितना कि उसका मानसिक और आस्थागत स्थिति।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका दावा आस्थाओं पर आधारित है, न कि प्रमाण और तर्क पर।**

आयत 83

आयत का अनुवाद: "और जब हमने आदमी को नेअमत अता फरमाई तो (उल्टे) उसने (हमसे) मुँह फेरा और पहलू बचाने लगा और जब उसे कोई तकलीफ छू भी गई तो मायूस हो बैठा।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जब आदमी को ईश्वर की नेमत मिलती है, तो वह मुँह फेरता है, और जब उसे तकलीफ मिलती है तो मायूस हो जाता है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा मानवीय स्वभाव पर आधारित है, लेकिन यह सभी व्यक्तियों पर लागू नहीं होता। सभी लोग अपने सुख और दुखों को अलग-अलग तरीके से ग्रहण करते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति अपने कार्यों के अनुसार परिणामों का सामना करता है, और यह स्थितियां हमेशा एक जैसी नहीं होतीं।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे सार्वभौमिक रूप से सभी मनुष्यों पर लागू किया गया है, जबकि यह व्यक्तिगत अनुभवों और परिस्थितियों के अनुसार भिन्न हो सकता है।**

आयत 84

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हर (एक अपने तरीक़े पर कारगुज़ारी करता है फिर तुम में से जो शख़्स बिल्कुल ठीक सीधी राह पर है तुम्हारा परवरदिगार (उससे) खूब वाक़िफ है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि हर व्यक्ति अपनी-अपनी राह पर चलता है, और जो सही राह पर है, उसका ईश्वर से गहरा संबंध है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा आत्मज्ञान और सही मार्ग को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके पीछे कोई प्रमाण या तर्क नहीं है। सही और गलत रास्ते का निर्धारण व्यक्तिगत और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कई प्रकार के मार्गों का वर्णन किया गया है (ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग, कर्म मार्ग), और इन मार्गों का सत्यता और उपयोगिता व्यक्ति के लक्ष्य पर निर्भर करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी एक मार्ग को सार्वभौमिक रूप से सही घोषित किया गया है, बिना किसी तर्क या प्रमाण के।**

आयत 85

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुमसे लोग रुह के बारे में सवाल करते हैं तुम (उनके जवाब में) कह दो कि रूह (भी) मेरे परदिगार के हुक्म से (पैदा हुई है) और तुमको बहुत थोड़ा सा इल्म दिया गया है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि रूह का उत्पत्ति ईश्वर के हुक्म से होती है, और मनुष्य को इस विषय में बहुत कम ज्ञान दिया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन रूह के अस्तित्व और उत्पत्ति पर कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं दिया गया है। मनुष्य को सीमित ज्ञान देने का कथन भी प्रमाणिक नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में रूह (आत्मा) के अस्तित्व और उसके सिद्धांत पर विस्तृत चर्चा की गई है, और यह तात्त्विक दृष्टिकोण पर आधारित है, न कि केवल विश्वास पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह रूह के अस्तित्व को बिना प्रमाण के स्वीकार करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	**प्रमेय**	**असत्य के नष्ट होने को सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करना।**
82	**प्रमाण**	**कुरान का प्रभाव केवल आस्था पर आधारित बताना।**
83	**व्याप्ति**	**मनुष्यों के व्यवहार को सार्वभौमिक रूप से लागू करना।**
84	**प्रमेय**	**सही मार्ग को सार्वभौमिक रूप से सही मानना।**
85	**प्रमाण**	**रूह के अस्तित्व को बिना प्रमाण के स्वीकार करना।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में विभिन्न दावे किए गए हैं, लेकिन इनमें तर्क और प्रमाण की कमी दिखाई देती है। यह दावे धार्मिक विश्वासों और आस्थाओं पर आधारित हैं, जिनका वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन किया गया है, और इनमें कुछ कमजोरियाँ और अप्रमाणित विचार सामने आए हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 86

आयत का अनुवाद: "(इसकी हक़ीकत नहीं समझ सकते) और (ऐ रसूल) अगर हम चाहे तो जो (कुरान) हमने तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा है (दुनिया से) उठा ले जाएँ फिर तुम अपने वास्ते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार न पाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि यदि ईश्वर चाहे तो कुरान को उठा सकता है और फिर कोई भी मददगार नहीं मिलेगा।**
- **हेतु (Reason): यह दावा इस आधार पर है कि ईश्वर की इच्छा सर्वोपरि है। हालांकि, यह किसी ठोस तर्क या प्रमाण से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि यह धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में ईश्वर की इच्छा को परम सत्य माना जाता है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। कुरान का अस्तित्व और प्रभाव इस आस्थात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का प्रमेय सिद्धांत पर आधारित दावा बिना प्रमाण के किया गया है, इसलिए यह तार्किक रूप से पुष्टि नहीं किया जा सकता।**

आयत 87

आयत का अनुवाद: "मगर ये सिर्फ तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है (कि उसने ऐसा किया) इसमें शक नहीं कि उसका तुम पर बड़ा फज़्ल व करम है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि कुरान का अस्तित्व और उसका प्रभाव केवल ईश्वर की रहमत और करम से है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा पूर्ण रूप से धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि किसी तार्किक या अनुभवजन्य प्रमाण पर। किसी धार्मिक ग्रंथ के अस्तित्व का कारण आस्थाएँ और विश्वास होते हैं, न कि अनुभवजन्य या प्रमाणिक कारण।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी वेदों का महत्व माना जाता है, लेकिन यह विश्वास आस्थाओं और व्यक्तित्व की विविधता पर निर्भर करता है।**

- निगमन (Conclusion): इस आयत का प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित दावा भी केवल आस्था पर निर्भर है, न कि किसी ठोस प्रमाण पर।

आयत 88

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अगर सारे दुनिया जहाँन के) आदमी और जिन इस बात पर इकट्ठे हो कि उस क़ुरान का मिसल ले आएँ तो (ना मुमकिन) उसके बराबर नहीं ला सकते अगरचे (उसको कोशिश में) एक का एक मददगार भी बने।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि कोई भी व्यक्ति या समूह क़ुरान का समान कोई अन्य ग्रंथ नहीं ला सकता।
- हेतु (Reason): यह दावा किसी विशेष ग्रंथ की अपरिहार्यता को साबित करता है, लेकिन इसके आधार पर कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है। यह केवल आस्थाओं और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी कई शास्त्रों का उल्लेख है, लेकिन यह भी विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है। इन शास्त्रों का स्तर किसी एक विशेष दावे पर नहीं बनाया गया है।
- निगमन (Conclusion): इस आयत का प्रमाण पर आधारित दावा किसी वास्तविक प्रमाण या तर्क के बिना किया गया है। यह आस्था पर निर्भर है, न कि किसी ठोस तर्क पर।

आयत 89

आयत का अनुवाद: "और हमने तो लोगों (के समझाने) के वास्ते इस क़ुरान में हर क़िस्म की मसलें अदल बदल के बयान कर दीं उस पर भी अक्सर लोग बग़ैर नाशुक्री किए नहीं रहते।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि कुरान में विभिन्न मसले पूरी तरह से और विविध दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन लोग उसे नाशुक्रा रहते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह दावा व्याप्ति के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें यह कहा गया है कि कुरान में सभी प्रकार के मुद्दों का समाधान है, लेकिन लोग इसे स्वीकार नहीं करते। हालांकि, यह सार्वभौमिक सत्य नहीं है क्योंकि सभी लोगों की समझ और दृष्टिकोण भिन्न होते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी शास्त्रों का उद्देश्य लोगों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन देना होता है, लेकिन यह भी स्वीकार्य नहीं होता है सभी के लिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के तहत एक सामान्यीकृत दावा करती है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत ९०

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल कुफ्फार मक्के ने) तुमसे कहा कि जब तक तुम हमारे वास्ते ज़मीन से चश्मा (न) बहा निकालोगे हम तो तुम पर हरगिज़ इमान न लाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत मक्का के काफिरों के द्वारा किए गए दावे का उल्लेख करती है कि वे तब तक इमान नहीं लाएंगे जब तक कि रसूल चश्मा न बहा दें।
- **हेतु (Reason):** यह दावा काफिरों के अव्यावहारिक और अप्रासंगिक तर्क पर आधारित है। किसी धार्मिक विश्वास को सिद्ध करने के लिए केवल एक चमत्कारी घटना का दावा करना तार्किक रूप से गलत है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में कोई भी धार्मिक घटना या चमत्कारी घटना सत्य को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं मानी जाती। यह केवल भ्रम और आस्थाओं पर आधारित होती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत हेतु के सिद्धांत के तहत एक गलत तर्क का उदाहरण प्रस्तुत करती है, क्योंकि काफिरों का दावा किसी वास्तविक प्रमाण या तर्क पर आधारित नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
86	प्रमेय	ईश्वर की इच्छा को केवल आस्था पर आधारित स्वीकारना।
87	प्रमाण	कुरान के अस्तित्व को केवल रहमत और करम से जोड़ना।
88	प्रमाण	कुरान के समान ग्रंथ को लाना असंभव होना बिना प्रमाण के कहना।
89	व्याप्ति	कुरान के सभी मसलों को सही मानना, जो सार्वभौमिक रूप से सही नहीं हो सकता।
90	हेतु	चमत्कारी घटना को इमान लाने का आधार मानना।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में दिए गए दावे आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित हैं, लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के तहत इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन किया गया है और पाया गया है कि ये दावे अक्सर सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, जबकि इनके पीछे कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 91

आयत का अनुवाद: "या (ये नहीं तो) खजूरों और अँगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो उसमें तुम बीच बीच में नहरे जारी करके दिखा दो।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि कुरान में वर्णित चमत्कारी घटनाएँ किसी बाग़ में नहरें बहाकर दिखाने के समान हो सकती हैं।**

- **हेतु (Reason): यह दावा एक उपमान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो किसी धार्मिक सिद्धांत को साबित करने का एक असामान्य तरीका है। हालांकि, यह सिद्धांत केवल रूपक है और इसके पीछे कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में चमत्कारी घटनाओं के आधार पर सत्य को प्रमाणित करना उचित नहीं माना जाता है, क्योंकि सत्य को सिद्ध करने के लिए तार्किक तर्क और प्रमाण आवश्यक होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का दावा उपमान के द्वारा चमत्कारी घटनाओं को सत्य सिद्ध करने का प्रयास करता है, जो तार्किक दृष्टिकोण से अपर्याप्त और असंवेदनशील है।**

आयत 92

आयत का अनुवाद: "या जैसा तुम गुमान रखते थे हम पर आसमान ही को टुकड़े (टुकड़े) करके गिराओ या ख़ुदा और फरिष्तों को (अपने क़ौल की तस्दीक़) में हमारे सामने (गवाही में ला खड़ा कर दिया।)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि कुरान में जो बातें कही गई हैं, वे चमत्कारी घटनाओं के रूप में वास्तविकता में परिवर्तित हो सकती हैं, जैसे आसमान को टुकड़े-टुकड़े करना।**
- **हेतु (Reason): यह दावा प्रमेय के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें यह कहा जा रहा है कि ईश्वर की शक्ति अनंत है और वह किसी भी चमत्कारी घटना को वास्तविकता बना सकता है। हालांकि, इस तरह के दावे बिना किसी ठोस प्रमाण या तर्क के केवल आस्था पर आधारित होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में ऐसे चमत्कारी घटनाओं का अस्तित्व केवल किवदंतियों और धार्मिक कथाओं में पाया जाता है, न कि किसी तार्किक या अनुभवजन्य आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के आधार पर चमत्कारी घटनाओं को सत्य के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित है, न कि किसी ठोस प्रमाण पर।**

आयत 93

आयत का अनुवाद: "और जब तक तुम हम पर ख़ुदा के यहाँ से एक किताब न नाज़िल करोगे कि हम उसे खुद पढ़ भी लें उस वक़्त तक हम तुम्हारे (आसमान पर चढ़ने के भी) क़ायल न होगें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लोग कुरान को स्वीकार नहीं करेंगे जब तक कि एक और चमत्कारी किताब न भेजी जाए, जिसे वे खुद पढ़ सकें।**
- **हेतु (Reason): यह दावा प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन यह केवल आस्था पर आधारित है, न कि कोई वास्तविक प्रमाण प्रदान किया गया है। प्रमाण के रूप में केवल किसी किताब के अस्तित्व पर बल दिया जा रहा है, जबकि यह केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कोई भी धार्मिक ग्रंथ अपने आप में सत्य नहीं होता जब तक वह तर्क, प्रमाण और अनुभव से साबित न हो। केवल किसी ग्रंथ का अस्तित्व उसे सत्य साबित नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का प्रमाण पर आधारित दावा भी केवल आस्था पर निर्भर है, और इसका कोई ठोस तार्किक आधार नहीं है।**

आयत 94

आयत का अनुवाद: "और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो उनको इमान लाने से इसके सिवा किसी चीज़ ने न रोका कि वह कहने लगे कि क्या ख़ुदा ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लोगों का इमान न लाने का कारण केवल यह था कि वे यह स्वीकार नहीं कर सकते थे कि ईश्वर ने एक इंसान को अपना रसूल चुना।**
- **हेतु (Reason): यह दावा किसी मानसिक अवरोध को प्रमाणित करता है, लेकिन यह बिना तर्क के केवल मानसिक अस्वीकार पर आधारित है। यदि वे ईश्वर के संदेश को समझने और स्वीकारने के लिए मानसिक रूप से खुले होते, तो वे इसे स्वीकार करते।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी जब किसी व्यक्ति की मानसिकता किसी विचार या दर्शन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होती, तो वह उस विचार को नकार देता है। यह केवल मानसिक अवरोध है, न कि सत्य का निर्धारण।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत मानसिक अवरोध को तर्कसंगत आधार के रूप में प्रस्तुत करती है, जो एक दोषपूर्ण और अप्रमाणिक दृष्टिकोण है।**

आयत 95

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (बसे हुये) होते कि इत्मेनान से चलते फिरते तो हम उन लोगों के पास फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर नाज़िल करते।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अगर पृथ्वी पर फरिश्ते बसते तो ईश्वर फरिश्तों को रसूल भेजते।**
- **हेतु (Reason): यह दावा व्याप्ति के सिद्धांत पर आधारित है, जो कहता है कि यदि पृथ्वी पर फरिश्ते होते तो ईश्वर फरिश्तों को रसूल बनाकर भेजते। हालांकि, यह व्याप्ति केवल एक काल्पनिक परिदृश्य पर आधारित है, जिसे तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में काल्पनिक परिदृश्यों का कोई वास्तविक आधार नहीं होता है, क्योंकि सत्य को केवल तर्क और प्रमाण के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के तहत एक काल्पनिक परिदृश्य का उल्लेख करती है, जो बिना किसी ठोस प्रमाण के एक विश्वास पर आधारित है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	उपमान	चमत्कारी घटनाओं को सत्य साबित करने का असंवेदनशील प्रयास।

92	**प्रमेय**	**प्रमेय का दावा बिना प्रमाण के किया गया।**
93	**प्रमाण**	**प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित दावा केवल आस्था पर निर्भर।**
94	**हेतु**	**मानसिक अवरोध को सत्य साबित करने का प्रयास, बिना तार्किक आधार के।**
95	**व्याप्ति**	**काल्पनिक परिदृश्यों के आधार पर व्याप्ति का दावा, जो प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में चमत्कारी घटनाओं, काल्पनिक परिदृश्यों, और मानसिक अवरोधों के आधार पर सत्य को प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है। इन दावों में कोई ठोस प्रमाण या तार्किक आधार नहीं है और ये केवल आस्था और विश्वास पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, सत्य को प्रमाणित करने के लिए ठोस तर्क और प्रमाण आवश्यक होते हैं, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 96

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हमारे तुम्हारे दरम्यिान गवाही के वास्ते बस ख़ुदा काफी है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों के हाल से खूब वाक़िफ और देखता रहता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा अपने बंदों के हाल से पूरी तरह वाकिफ़ है, और यही उसकी गवाही के लिए पर्याप्त है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसमें यह सिद्धांत केवल आधिकारिक आस्था पर निर्भर है। सत्य को प्रमाणित करने के लिए अन्य तर्कसंगत या भौतिक प्रमाण आवश्यक होते हैं, न कि केवल आस्था और विश्वास।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में किसी विचार या सिद्धांत की पुष्टि के लिए केवल आस्था या विश्वास नहीं, बल्कि प्रमाण और अनुभव आवश्यक माने जाते हैं।**

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रमाण का दावा किया गया है, लेकिन यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है, जो किसी प्रमाणिक तर्क से समर्थित नहीं है।

आयत 97

आयत का अनुवाद: "और ख़ुदा जिसकी हिदायत करे वही हिदायत याफ़ता है और जिसको गुमराही में छोड़ दे तो (याद रखो कि) फिर उसके सिवा किसी को उसका सरपरस्त न पाओगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों का मुँह के बल औंधे और गूँगें और बहरे क़ब्रों से उठाएँगें उनका ठिकाना जहन्नुम है कि जब कभी बुझने को होगी तो हम उन लोगों पर (उसे) और भड़का देंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा जिनको हिदायत देता है, वही हिदायत प्राप्त करते हैं, और जो गुमराही में होते हैं, उन्हें कोई मदद नहीं मिल सकती।
- **हेतु (Reason):** यहाँ कारण के रूप में यह कहा गया है कि हिदायत या गुमराही केवल ख़ुदा के हाथ में है, और जिन पर वह अपना कृपा बरसाता है, वही हिदायत प्राप्त करते हैं। हालांकि, इस तरह के दावे में तर्क की कमी है क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और चयन की स्वतंत्रता को नकारता है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में स्वतंत्र इच्छा और कर्तव्य पर बल दिया जाता है। मनुष्य के कर्म और उसके निर्णय उसके भविष्य को निर्धारित करते हैं, न कि किसी बाहरी शक्ति द्वारा केवल हिदायत या गुमराही।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक अंतर्निहित कारण का दावा करती है, लेकिन यह स्वतंत्रता और कारण के तर्क को नकारते हुए केवल आधिकारिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 98

आयत का अनुवाद: "ये सज़ा उनकी इस वज़ह से है कि उन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगे कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल) कर हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगीं तो क्या फिर हम नये सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग मरने के बाद पुन: जीवन में आने का विश्वास नहीं करते हैं और इसके लिए ईश्वर की शक्ति पर सवाल उठाते हैं।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह है कि लोग इस विचार को नकारते हैं कि ईश्वर मृत शरीर को पुनः जीवित कर सकता है। यहाँ पर, यह दावा किया जा रहा है कि ईश्वर की शक्ति अनंत है और वह सब कुछ कर सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी पुनर्जन्म या शरीर के पुनः जीवन में आने का विचार पर आधारित है, लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस तर्क या अनुभवजन्य प्रमाण आवश्यक होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रमाण के आधार पर दावा किया गया है, लेकिन यह केवल विश्वास और आस्था पर निर्भर है, न कि तर्क और वास्तविकता पर। पुनः जीवन का विचार बिना ठोस प्रमाण के केवल आस्थाओं का हिस्सा बनकर रह जाता है।**

आयत 99

आयत का अनुवाद: "क्या उन लोगों ने इस पर भी नहीं ग़ौर किया कि वह ख़ुदा जिसने सारे आसमान और ज़मीन बनाए इस पर भी (ज़रुर) क़ादिर है कि उनके ऐसे आदमी दोबारा पैदा करे और उसने उन (की मौत) की एक मियाद मुक़र्रर कर दी है जिसमें ज़रा भी शक नहीं उस पर भी ये ज़ालिम इन्कार किए बग़ैर न रहे।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि यदि ईश्वर आसमान और पृथ्वी बना सकता है, तो वह किसी व्यक्ति को पुनः जीवित भी कर सकता है।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह दिया गया है कि अगर ईश्वर पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकता है, तो वह किसी व्यक्ति को फिर से जीवित भी कर सकता है। यह तर्क इस आधार पर होता है कि जो शक्ति बड़ी चीज़ों पर है, वही छोटी चीज़ों पर भी लागू हो सकती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में ब्रह्मांड की रचना और उसके संचालन को ईश्वर की शक्ति का प्रतीक माना जाता है, लेकिन यह शक्ति केवल दृश्य और भौतिक प्रमाणों से सिद्ध की जाती है, न कि केवल विश्वास या आस्था के माध्यम से।**

- **निगमन (Conclusion): इस आयत का तर्क एक कारण पर आधारित है, लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए कोई वास्तविक प्रमाण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 100

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) इनसे कहो कि अगर मेरे परवरदिगार के रहमत के ख़ज़ाने भी तुम्हारे एख़्तियार में होते तो भी तुम खर्च हो जाने के डर से (उनको) बन्द रखते और आदमी बड़ा ही तंग दिल है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर लोग ईश्वर की रहमत के खज़ाने में हाथ डालने के लिए सक्षम होते तो वे उसे खर्च करने से डरते, क्योंकि मनुष्य स्वभाव से कंजूस और तंग दिल होता है।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि मनुष्य का स्वभाव स्वार्थी होता है, और वह कभी भी अपनी संपत्ति को दूसरों के लिए खर्च करने में सहज नहीं होता। यह प्रमेय में व्यक्त किया गया है कि आदमी स्वभाव से कंजूस होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह माना जाता है कि मनुष्य का स्वभाव प्रायः स्वार्थपूर्ण और सीमित होता है, लेकिन यह भी कहा जाता है कि वह शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से अपने स्वभाव में सुधार ला सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के रूप में मनुष्य के स्वभाव को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे केवल एक सामान्यीकृत सिद्धांत के रूप में देखा जा सकता है, जो सब पर लागू नहीं होता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
96	प्रमाण	प्रमाण का दावा केवल आस्था और विश्वास पर आधारित है, बिना किसी भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण के।

97	कारण	गुमराही और हिदायत को केवल ईश्वर की इच्छा पर आधारित करना व्यक्तिगत स्वतंत्रता की उपेक्षा है।
98	प्रमाण	मृत शरीर के पुनः जीवित होने का विचार बिना ठोस प्रमाण के केवल विश्वास का हिस्सा है।
99	कारण	बड़े कारणों से छोटे कारणों को साबित करने का तर्क बिना प्रमाण के है।
100	प्रमेय	प्रमेय के रूप में मनुष्य के स्वभाव को सामान्यीकृत करना, जो हर व्यक्ति पर लागू नहीं हो सकता।

समग्र निष्कर्षः इन आयतों में प्रस्तुत विचार और दावे तार्किक दृष्टिकोण से अपूर्ण हैं। ये केवल विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, जबकि सत्य और प्रमाण की पुष्टि तर्क और अनुभव के माध्यम से होनी चाहिए। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, हर दावे का तार्किक और प्रमाणिक आधार होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 101

आयत का अनुवादः "और हमने यक़ीनन मूसा को खुले हुए नौ मौजिज़े अता किए तो (ऐ रसूल) बनी इसराईल से (यही) पूछ देखो कि जब मूसा उनके पास आए तो फिरआऊन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मैं तो समझता हूँ कि किसी ने तुम पर जादू करके दीवाना बना दिया है।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि मूसा को नौ मौजिज़े (चमत्कारी संकेत) दिए गए, और फिरआऊन ने इनको जादू मानते हुए मूसा को आरोपित किया।**
- **हेतु (Reason): फिरआऊन ने यह तर्क दिया कि मूसा पर जादू किया गया था, क्योंकि उसने जो चमत्कारी संकेत दिखाए थे, वे उसकी समझ में नहीं आए थे। इसका कारण यह हो सकता है कि**

फिरआऊन ने प्रकृति या तर्क के आधार पर मूसा के संकेतों को नहीं समझा, और इस प्रकार उन्होंने मूसा पर जादू का आरोप लगाया।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी, जब कोई अद्वितीय या असामान्य घटना घटती है, तो उसे तर्कसंगत तरीके से समझने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, शास्त्रों में ऐसे घटनाओं का विश्लेषण तर्क और अनुभव से किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में फिरआऊन की प्रतिक्रिया और आरोप केवल उसकी असमर्थता और तर्कहीनता को दर्शाती है, न कि किसी वास्तविक प्रमाण या चमत्कारी घटना को। यह केवल विश्वास का हिस्सा बनकर रह जाता है, जो वास्तविकता से मेल नहीं खाता।

आयत 102

आयत का अनुवाद: "मूसा ने कहा तुम ये ज़रुर जानते हो कि ये मौजिज़े सारे आसमान व ज़मीन के परवरदिगार ने नाज़िल किए (और वह भी लोगों की) सूझ बूझ की बातें हैं और ऐ फिरआऊन मैं तो ख़्याल करता हूँ कि तुम पर शामत आई है।"

चुना गया न्याय तत्व: कारण (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** मूसा ने कहा कि ये मौजिज़े ईश्वर से आए हैं, और फिरआऊन की स्थिति खराब होने वाली है।
- **हेतु (Reason):** मूसा का कहना था कि ये चमत्कारी घटनाएँ ईश्वर की शक्ति से प्रकट हुई हैं और फिरआऊन ने इन घटनाओं को नकारा है, जिससे उसकी स्थिति ख़राब होने वाली है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दार्शनिकता में, यदि कोई व्यक्ति किसी घटना या चमत्कारी शक्ति को नकारता है, तो उसके लिए उसके परिणाम भुगतने की बात कही जाती है, जैसे कि कर्मफल सिद्धांत में देखा जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** मूसा का बयान धार्मिक दृष्टिकोण से सही माना जा सकता है, लेकिन यह एक एकांगी दृष्टिकोण है, जो तर्क और प्रमाण की अनुपस्थिति में विश्वास और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 103

आयत का अनुवाद: "फिर फिरआऊन ने ये ठान लिया कि बनी इसराईल को (सर ज़मीने) मिस्र से निकाल बाहर करे तो हमने फिरआऊन और जो लोग उसके साथ थे सब को डुबो मारा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फिरआऊन ने अपने अहंकार में यह निर्णय लिया कि वह बनी इसराईल को मिस्र से बाहर निकाल देगा, और इस कारण उसने अंततः अपना विनाश पाया।**
- **हेतु (Reason): फिरआऊन का अहंकार और इसराईल के प्रति उसकी नफरत ने उसे विनाश के मार्ग पर डाला। यह प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि अहंकार और अन्याय का परिणाम नकारात्मक होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह माना जाता है कि व्यक्ति का अहंकार और अन्याय न केवल उसके व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि समाज और राष्ट्र के स्तर पर भी विनाश का कारण बनता है।**
- **निगमन (Conclusion): फिरआऊन का पराजय और विनाश प्रमाणित होता है, लेकिन यह किसी नैतिक या तात्त्विक सिद्धांत से अधिक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में इसे कर्मफल के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन वास्तविक प्रमाण की अनुपस्थिति में यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है।**

आयत 104

आयत का अनुवाद: "और उसके बाद हमने बनी इसराईल से कहा कि (अब तुम ही) इस मुल्क में (खूब आराम से) रहो सहो फिर जब आख़िरत का वायदा आ पहुँचेगा तो हम तुम सबको समेट कर ले आएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि बनी इसराईल को आराम से रहने की अनुमति दी गई, लेकिन अंतिम समय में उन्हें एकत्रित किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यहाँ यह दावा किया गया है कि यह आदेश और वादा ईश्वर का था, और यह ईश्वर की योजना का हिस्सा था। हालांकि, यह दावा बिना किसी तर्क या प्रमाण के मात्र विश्वास पर आधारित है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी भविष्यवाणियाँ और आस्थाएँ व्यक्त की जाती हैं, लेकिन उन्हें साबित करने के लिए कोई तर्क या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भविष्यवाणी पर आधारित है, जो ईश्वर की इच्छा और योजना के तहत है, लेकिन इसका कोई प्रमाणिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

आयत 105

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) हमने इस कुरान को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया और बिल्कुल ठीक नाज़िल हुआ और तुमको तो हमने (जन्नत की) खुशखबरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला (रसूल) बनाकर भेजा है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि कुरान को पूरी तरह से ठीक और सही तरीके से नाजिल किया गया है, और रसूल को लोगों को खुशखबरी देने और अज़ाब से डराने के लिए भेजा गया है।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि कुरान की सटीकता और रसूल का उद्देश्य ईश्वर की योजना के अनुसार है, और यह सब कुछ ईश्वर की इच्छा और सत्य के अनुसार हुआ है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में शास्त्रों की प्रमाणिकता को स्थापित करने के लिए तर्क और प्रमाण का पालन किया जाता है। किसी धार्मिक ग्रंथ की सटीकता का मूल्यांकन अनुभव और तर्क से किया जाता है, न कि केवल विश्वास से।**
- **निगमन (Conclusion): यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और तर्क या प्रमाण की कमी है। किसी धार्मिक ग्रंथ की सत्यता को केवल आस्था से स्थापित करना तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि सत्य का निर्धारण प्रमाण और अनुभव से किया जाना चाहिए।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

101	प्रमाण	चमत्कारी घटनाएँ और विश्वास केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समर्थित हैं, न कि प्रमाणिक तर्क से।
102	कारण	पुनः विश्वास पर आधारित दावा, बिना वास्तविक तर्क या प्रमाण के।
103	प्रमाण	फिरआऊन का पराजय केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, इसमें तर्क की कमी है।
104	प्रमाण	यह दावा बिना प्रमाण के धार्मिक विश्वास पर आधारित है।
105	प्रमाण	कुरान की सटीकता और रसूल का उद्देश्य केवल विश्वास पर आधारित है, वास्तविक प्रमाण की अनुपस्थिति है।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में प्रस्तुत दावे और घटनाएँ ज्यादातर धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनमें तर्क या प्रमाण का अभाव है। न्याय दर्शन के अनुसार, हर दावे का प्रमाण और तर्क होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। यह केवल विश्वास और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो तर्क और वास्तविकता से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 106

आयत का अनुवाद: "और कुरान को हमने थोड़ा थोड़ा करके इसलिए नाज़िल किया कि तुम लोगों के सामने (ज़रुरत पड़ने पर) मोहलत दे देकर उसको पढ़ दिया करो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि कुरान को धीरे-धीरे नाज़िल किया गया ताकि लोगों को इसे पढ़ने का समय मिल सके।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि कुरान का धीरे-धीरे अवतरण इस उद्देश्य से हुआ था कि लोग उसे समय समय पर समझ सकें और उसका पालन कर सकें।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी, जब कोई शास्त्र या उपदेश दिया जाता है, तो उसे समय समय पर लोगों तक पहुँचाने की पद्धति अपनाई जाती है ताकि लोग उसे पूरी तरह से समझ सकें और उसका अनुसरण कर सकें।**
- **निगमन (Conclusion): यह दावा तर्कसंगत प्रतीत होता है, क्योंकि शास्त्रों का अवतरण कभी भी अचानक और तत्काल नहीं होता, बल्कि धीरे-धीरे उनके संदेश को लोगों तक पहुँचाना होता है। इससे शास्त्र का प्रभाव और समझ बढ़ती है।**

आयत 107

आयत का अनुवाद: "और (इसी वजह से) हमने उसको रफ्ता रफ्ता नाज़िल किया तुम कह दो कि ख़्वाह तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ इसमें शक नहीं कि जिन लोगों को उसके क़ब्ल ही (आसमानी किताबों का इल्म अता किया गया है उनके सामने जब ये पढ़ा जाता है तो ठुडडियों से (मुँह के बल) सजदे में गिर पड़तें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जिन लोगों को पहले से आसमानी किताबों का ज्ञान था, जब कुरान सुनते हैं तो वे सजदे में गिर पड़ते हैं।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि वे पहले से ही ईश्वर के संदेश को स्वीकार करते हैं, और कुरान को सुनकर उन्हें इसका सत्यापन मिलता है, जिससे वे श्रद्धा और सम्मान के साथ सजदे में गिरते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धर्मशास्त्रों में भी यही सिद्धांत है कि जो लोग पहले से धार्मिक शिक्षाओं के प्रति जागरूक होते हैं, वे शास्त्रों के सत्य को समझकर श्रद्धा से उनका पालन करते हैं। उदाहरण स्वरूप, वेदों का ज्ञान रखने वाले ऋषि और तपस्वी शास्त्रों के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे।**
- **निगमन (Conclusion): यह विचार भी तार्किक रूप से स्वीकार्य है, लेकिन यह एक मानसिक स्थिति पर आधारित है, जिसमें किसी धार्मिक ग्रंथ के प्रति पहले से कुछ आस्थाएँ होती हैं। इसे तर्क या प्रमाण के रूप में साबित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह आस्था और विश्वास पर आधारित है।**

आयत 108

आयत का अनुवाद: "और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा होना ज़रुरी था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग अपने परवरदिगार की पवित्रता की घोषणा करते हैं और मानते हैं कि उसका वायदा पूरा होना निश्चित है।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि वे ईश्वर के वायदे पर विश्वास करते हैं और उसे पूर्ण होने का यकीन रखते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी, जैसे कि उपनिषदों में, ईश्वर के वादे और सत्य को स्वीकार किया जाता है। ईश्वर के वादों पर विश्वास करना एक धार्मिक परंपरा है।**
- **निगमन (Conclusion): यह विचार विश्वास और श्रद्धा पर आधारित है, लेकिन इसका तर्क या प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन है, क्योंकि यह ईश्वर के वादों को मान्यता देने पर निर्भर है।**

आयत 109

आयत का अनुवाद: "और ये लोग (सजदे के लिए) मुँह के बल गिर पड़तें हैं और रोते चले जाते हैं और ये कुरान उन की ख़ाकसारी के बढ़ाता जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग कुरान सुनकर सजदे में गिर जाते हैं और रोने लगते हैं, और कुरान उनकी नम्रता और विनम्रता को बढ़ाता है।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि कुरान की सत्यता और उसकी गहराई लोगों को भावुक कर देती है, और उन्हें अपने भीतर अधिक नम्रता और विनम्रता महसूस होती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धार्मिक जीवन में भी जब लोग शास्त्रों का अध्ययन करते हैं या भगवद गीता सुनते हैं, तो वे अपनी स्थिति और कर्तव्यों पर गहरे विचार करते हुए भावुक हो जाते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह विचार श्रद्धा और भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है, और यह प्रमाणिक तर्क से अधिक विश्वास और अनुभव पर आधारित है।**

आयत 110

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि (तुम को एख़्तियार है) ख़्वाह उसे अल्लाह (कहकर) पुकारो या रहमान कह कर पुकारो (ग़रज़) जिस नाम को भी पुकारो उसके तो सब नाम अच्छे (से अच्छे) हैं और (ऐ रसूल) न तो अपनी नमाज़ बहुत चिल्ला कर पढ़ो न और न बिल्कुल चुपके से बल्कि उसके दरम्यिान एक औसत तरीका एख़्तेयार कर लो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह के नामों में कोई भी नाम पुकारने योग्य है, और नमाज़ पढ़ने का तरीका भी एक औसत होना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण यह बताया गया है कि अल्लाह के सभी नाम अच्छे हैं, और नमाज़ को चिल्ला कर या बहुत चुपके से पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक औसत तरीका अपनाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय शास्त्रों में भी पूजा और प्रार्थना के लिए औसत तरीका अपनाने की सलाह दी जाती है। उदाहरण स्वरूप, ध्यान या साधना में अत्यधिक उतावलापन या निष्क्रियता दोनों ही अवांछनीय मानी जाती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह सलाह तार्किक रूप से उचित है, क्योंकि किसी भी धार्मिक क्रिया में अत्यधिक उग्रता या निष्क्रियता दोनों ही संतुलन की कमी को दर्शाती हैं। औसत तरीका सबसे उपयुक्त होता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
106	प्रमाण	कुरान का धीरे-धीरे अवतरण एक तर्कसंगत निर्णय है, क्योंकि यह समझ और पालन को बढ़ाता है।

107	प्रमाण	यह श्रद्धा और आस्था पर आधारित है, बिना तर्क या प्रमाण के सिद्ध किया जा सकता है।
108	प्रमाण	यह विश्वास पर आधारित है, जिसका तर्क या प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन है।
109	प्रमाण	यह श्रद्धा और भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है, और तर्क से अधिक विश्वास पर निर्भर है।
110	प्रमाण	यह औसत तरीके का पालन करने की सलाह तार्किक रूप से उचित है, जो संतुलन और समझ को बढ़ाता है।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में अधिकतर बयान विश्वास, आस्था, और श्रद्धा पर आधारित हैं, जो तर्क और प्रमाण से नहीं प्रमाणित किए जा सकते। हालांकि, कुछ आयतें जैसे आयत 106 और 110 में तर्कसंगत बातें की गई हैं, जो संतुलन और समझ को बढ़ावा देती हैं, लेकिन अन्य आयतें केवल आस्थाओं और भावनाओं पर आधारित हैं।

आयत 111 का न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से निष्कर्ष (Conclusion):

आयत 111 में अल्लाह की अद्वितीयता, सर्वोच्चता और बड़ाई का वर्णन किया गया है। यह आयत दावा करती है कि अल्लाह के पास न कोई औलाद है, न उसका कोई साझेदार है, और न ही उसे किसी तरह की कमज़ोरी है। इस प्रकार, वह पूर्ण रूप से स्वायत्त और अद्वितीय है। हालांकि, न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इस आयत का तार्किक विश्लेषण कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करता है।

न्याय दर्शन के आधार पर आलोचना:

1. **विरोधाभास (Contradiction):**
    - **कुरान में कई स्थानों पर अल्लाह के हाथ, आंखें, और चेहरा जैसी मानवीय विशेषताओं का उल्लेख किया गया है (जैसे सूरह 55:27 और सूरह 38:75), जबकि सूरह अल-शूरा (42:11) में यह कहा गया है कि "उसके जैसा कुछ भी नहीं है।"**
    - **यह विरोधाभास उत्पन्न करता है, क्योंकि अगर अल्लाह के पास मानव जैसे अंग हैं, तो उसे शुद्ध निराकार और अद्वितीय बताने का दावा तर्कसंगत नहीं लगता। यह न्याय दर्शन के सिद्धांत "विरोधाभास" के खिलाफ है, जो कहता है कि किसी सत्य में कोई भी विरोधाभास नहीं होना चाहिए।**

2. **प्रमाण (Pramana) और अनुभवजन्य सत्य (Empirical Truth):**
    - **आयत में अल्लाह की अद्वितीयता और सर्वोच्चता की बात की गई है, लेकिन इसके लिए कोई वास्तविक प्रमाण या व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया गया। न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमाण वह है जो वास्तविकता को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करे। बिना वास्तविक प्रमाण के किसी सत्ता या गुण का अस्तित्व स्वीकार करना प्रमेय** (Prameya) **के सिद्धांत का उल्लंघन करता है।**
3. **व्याप्ति (Vyapti) और सार्वभौमिकता का अभाव:**
    - **"उसके जैसा कुछ नहीं है" का दावा अल्लाह की अद्वितीयता को प्रमाणित करने का प्रयास करता है, लेकिन जब कुरान में अल्लाह के अंगों का वर्णन किया जाता है, तो यह सार्वभौमिकता और व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ जाता है। यदि अल्लाह के अंग मानव अंगों जैसे हैं, तो यह उसकी सार्वभौमिकता और अद्वितीयता को सीमित करता है।**
4. **नैतिक दृष्टिकोण (Moral Critique):**
    - **न्याय दर्शन के अनुसार, किसी सर्वशक्तिमान सत्ता का स्वभाव नैतिक होना चाहिए। कुरान में अल्लाह को "दयालु" और "सर्वज्ञ" कहा गया है, लेकिन साथ ही वह "गुस्सा" करता है, "सज़ा" देता है, और "दुश्मनों" को दंडित करता है। यह दयालुता और गुस्से के स्वभाव का सह-अस्तित्व तार्किक रूप से असंगत है। एक सच्चे नैतिक ईश्वर को केवल दयालु और न्यायकारी होना चाहिए, और गुस्से की प्रवृत्ति नैतिकता के सार्वभौमिक सिद्धांत के खिलाफ है।**
5. **अस्पष्टता (Ambiguity):**
    - **"अल्लाह के जैसा कुछ नहीं है" का दावा अस्पष्ट है, क्योंकि कुरान में कभी-कभी अल्लाह के अंगों और रूपों का वर्णन किया जाता है, जो इसे स्पष्ट और संदेह रहित नहीं बनाता। यह न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत के खिलाफ है, जो कहता है कि सत्य और तर्क स्पष्ट और संदेह रहित होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, आयत 111 में अल्लाह की सर्वोच्चता और अद्वितीयता का वर्णन तर्कसंगत रूप से अस्पष्ट और विरोधाभासी प्रतीत होता है।

1. **विरोधाभास: कुरान में अल्लाह के मानव जैसे अंगों का वर्णन और "उसके जैसा कुछ नहीं है" का दावा विरोधाभासी है।**
2. **प्रमाण का अभाव: आयत में अल्लाह की गुणों का कोई वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया, जो न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत का उल्लंघन करता है।**
3. **व्याप्ति का अभाव: अल्लाह के अंगों का वर्णन उसकी सार्वभौमिकता और अद्वितीयता के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
4. **नैतिकता की कमजोरी: अल्लाह का दयालु और गुस्से वाला स्वभाव नैतिक दृष्टिकोण से असंगत है।**
5. **अस्पष्टता: "उसके जैसा कुछ नहीं है" का दावा अस्पष्टता को जन्म देता है, जिससे सत्य और तर्क संदेहपूर्ण होते हैं।**

इस प्रकार, न्याय दर्शन के सिद्धांत - प्रमाण, विरोधाभास, और व्याप्ति - के अनुसार इस आयत का विवरण तार्किक रूप से संगत नहीं है और यह मानवता के लिए असंगत है।

न्याय दर्शन के अनुसार अल्लाह की अच्छाई पर संदेह:
न्याय दर्शन, जो भारतीय तर्कशास्त्र और दर्शन का एक प्रमुख भाग है, सत्य को प्रमाणित करने के लिए तार्किक तर्क और वैध प्रमाण (प्रमाण) पर जोर देता है। इस दृष्टिकोण से, अल्लाह के गुणों और वर्णन के आधार पर उसकी अच्छाई को जांचने के लिए निम्नलिखित बिंदु प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

---

1. विरोधाभास (Contradiction)

- **कुरान के अनुसार:**
  - **"अल्लाह के हाथ," "चेहरे," और "आंखों" का उल्लेख किया गया है (सूरह 55:27 और सूरह 38:75)।**
  - **लेकिन, सूरह अल-शूरा (42:11) कहती है: *"उसके जैसा कुछ भी नहीं है।"***
- **न्याय दर्शन का विश्लेषण:**
  - **न्याय सिद्धांत: विरोधाभास (विरोध) सत्य का उल्लंघन करता है।**
  - **यदि अल्लाह के "हाथ," "चेहरे," और "आंखों" का उल्लेख किया गया है, तो यह उसे मानव-समरूप (anthropomorphic) बनाता है।**
  - **लेकिन "उसके जैसा कुछ भी नहीं" का दावा इन विवरणों का खंडन करता है।**
  - **इस विरोधाभास के कारण, अल्लाह का स्वरूप तार्किक रूप से स्पष्ट और प्रमाणिक नहीं है।**

---

2. प्रमाण (Pramana) और अनुभवजन्य सत्य (Empirical Truth)

- **अल्लाह के अंगों का वर्णन:**
    - कुरान और हदीस में अल्लाह के हाथ, आंखें, और चेहरे का उल्लेख है।
    - लेकिन इनका "कोई समानता नहीं" और "मनुष्यों के समझ से परे" होने का दावा भी है।
- **न्याय सिद्धांत:**
    - प्रमाण वह है जो वास्तविकता को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करे।
    - अगर अल्लाह के अंगों को "अद्वितीय" और "असमझनीय" कहा जाता है, तो यह तर्क के लिए आधारहीन है।
    - बिना प्रमाण के अल्लाह के अस्तित्व या गुणों को स्वीकार करना न्याय दर्शन के प्रमेय (Prameya) सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

---

3. व्याप्ति (Vyapti) और सार्वभौमिकता का अभाव

- **न्याय दर्शन का दृष्टिकोण:**
    - सत्य सार्वभौमिक होना चाहिए।
    - यदि अल्लाह के "अंग" (हाथ, आंखें) का वर्णन कुरान में मानव अंगों जैसा है, तो यह उसकी सार्वभौमिकता और अद्वितीयता को सीमित करता है।
- **अल्लाह का गुण:**
    - "उसके जैसा कुछ भी नहीं है" यह कहकर अल्लाह की विशेषताएं असामान्य बताई जाती हैं।
    - लेकिन अगर ये अंग वर्णित किए गए हैं, तो यह सार्वभौमिकता और व्याप्ति के सिद्धांत के विपरीत है।
    - इसका मतलब है कि अल्लाह की विशेषताओं का विवरण तार्किक रूप से संगत नहीं है।

---

4. हेत्वाभास (Fallacy)

- **स्वभावगत हेत्वाभास (Nature Fallacy):**
    - अल्लाह को "दयालु," "अद्वितीय," और "सर्वज्ञ" कहा गया है, लेकिन वह "गुस्सा" करता है, "सज़ा" देता है, और "दुश्मनों" को दंडित करता है।
- **न्याय दर्शन का सिद्धांत:**
    - कोई भी गुण या स्वरूप अपने आप में विरोधाभासी नहीं होना चाहिए।

- दयालु और गुस्से वाले स्वभाव का सह-अस्तित्व तार्किक रूप से असंगत है।

- **उदाहरण:**
  - अगर अल्लाह "दयालु" है, तो वह "हमेशा" दया करेगा।
  - लेकिन अगर वह गुस्सा करता है और सज़ा देता है, तो उसका दयालु होना प्रश्न के दायरे में आ जाता है।

---

5. "अल्लाह के जैसा कुछ नहीं" – अस्पष्टता (Ambiguity)

- **अल्लाह का अद्वितीय होना:**
  - "अल्लाह के जैसा कुछ नहीं है" का दावा, लेकिन फिर भी उसके अंगों का वर्णन, उसकी अस्पष्टता को दर्शाता है।
- **न्याय दर्शन का सिद्धांत:**
  - सत्य और तर्क स्पष्ट और संदेह रहित होना चाहिए।
  - अगर अल्लाह की विशेषताएं और गुण स्पष्ट नहीं हैं, तो यह न्याय के प्रमाण (Pramana) सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

---

6. अल्लाह की नैतिकता (Moral Critique)

- **न्याय दर्शन का दृष्टिकोण:**
  - "ईश्वर" का स्वरूप नैतिकता (Dharma) का आधार होना चाहिए।
- **अल्लाह का व्यवहार:**
  - अल्लाह का वर्णन उसे "दयालु" और "न्यायकारी" के रूप में करता है।
  - लेकिन कुरान में कई स्थानों पर, वह "सज़ा" देने वाला, "नष्ट करने वाला," और "दंड देने वाला" भी है।
- **न्याय सिद्धांत:**
  - एक सच्चा नैतिक ईश्वर केवल दयालु और न्यायकारी होगा।
  - गुस्से और सज़ा की प्रवृत्ति नैतिकता की सार्वभौमिक धारणा के विपरीत है।

निष्कर्ष (Conclusion):

न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, अल्लाह के गुण और स्वरूप तार्किक रूप से संगत नहीं हैं।

1. **"अल्लाह के अंग" के बारे में विरोधाभासी विवरण (शाब्दिक और रूपक) उसकी विशेषताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में विफल रहता है।**
2. **"दयालु" और "गुस्सा करने वाले" स्वभाव का सह-अस्तित्व नैतिक दृष्टिकोण से असंगत है।**
3. **"उसके जैसा कुछ नहीं है" का दावा उसकी "अद्वितीयता" और "सर्वज्ञता" को साबित करने के बजाय अस्पष्ट बनाता है।**

न्याय दर्शन के सिद्धांत - प्रमाण, व्याप्ति, और तर्क - के अनुसार, अल्लाह का स्वरूप तार्किकता और नैतिकता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।